आदि २ सज्जनो के मधुरलय मे कविता पाठ हुये।

तत्पश्चात मुनि श्री ने आगन्तुक राज्य कर्मचारियो का ध्यान आकर्पित करते हुये फर्माया कि आप लोगो से अनुरोध है कि आप सदैव प्रजा का पालन न्याय नीति से करें। बेरहमी, रिश्वतखोरी या किसी तरह का जोर, जुल्म और अत्याचार न करें। सावधानी के साथ धर्म का पालन करते हुये जनता पर शासन करें। यही मेरी शुभ कामना है। तदनन्तर मुनि श्री ने सवत्सरिक क्षमा याचना के विषय पर सारगर्भित भापण दिया।

दोपहर को पाटावली, आलोयणा सुना कर रात्रि मे सवत्सरिक प्रतिक्रमण कर चोरासी लक्ष जीवा योनियो से क्षमा याचना की। मुनि श्री के चातुर्मास से इन महा मागलिक पर्यूपण पर्वो मे बेले, तेले, चोले, पचोले, अठाई उपवास, आयम्बिल आदि २ तपश्चर्या की झडी मानो साक्षात् मेघदेव की झडी थी। खूब आनन्द समारोहपूर्वक पर्यूपण पर्वाधिराज समाप्त हुये।

ता० ५-६-४२ को क्षमायाचना के दिवस श्री पर्व शिरोमणि पर्यूपण, श्री नवकार महामन्त्र, अखण्ड जाप तथा ॐ शान्ति प्रार्थना आदि के पूर्ति दिवस के अगले दिन प्रात.काल मे श्रावको की काफी सख्या मे मुनि श्री ने उक्त मागलिक कार्यों के विषय मे लक्ष्य डालते हुये ॐ शाति की प्रार्थना मधुरलय मे फर्मा कर मागलिक फर्माया। तदनन्तर कई एक कार्यकर्त्ताओ ने खडे होकर उपस्थित जनता के समक्ष प्रस्ताव रखा कि जब तक मुनिश्री अजमेर से विहार न कर जाये तब तक ॐ शाति की ध्वनि नित्य प्रति होनी चाहिये। तत्पश्चात उपस्थित सज्जनो से निवेदन किया कि आप सबसे हमारी यही प्रार्थना है कि आज की भाति आप

सब अच्छी तादाद मे कचहरी मे प्रातः ७॥ बजे उक्त प्रार्थना में सम्मिलित होकर विश्व शांति मे सहायक बनें। बाद मे वीर प्रभु की जयनाद के साथ सभा विसर्जन हुई।

क्षमा याचना दिवस पश्चात मुनि श्री पुनः कचहरी मे पधार गये। नित्य प्रति ॐ शांति की प्रार्थना होती रही। यहां भी मुनि श्री के दर्शनार्थ तथा अमृत वचन श्रवणार्थ श्रीमान् असिस्टेन्ट कमिश्नर साहिब, राव साहब जीवनसिंहजी टाटोटी आदि पदाधिकारी अनेक बार पधारे।

उक्त शुभ पर्व के अवसर पर श्रीमान् सेठ नारायणदासजी की ओर से 'मनोहर चौबीसी' तथा सेठ कानमलजी सिंघवी की ओर से 'प्रातःस्मरणीय पद' आदि छपवा कर जनता मे वितीर्ण किये गये।

## अनन्त चतुर्दशी के दिन जीव हिंसा बंद

आपका स्वभाव है कि जहाँ कहीं भी पधारते हैं, जीवों का उपकार करने की धारणा धारते और उसके लिये उपाय रचते हैं। आपकी सच्ची भावना थी कि अनन्त चतुर्दशी (जो कि सभी हिन्दुओं तथा जैनियों का मुख्य पर्व दिवस है) के दिन शहर के ही नहीं किन्तु सारे मेरवाड़े भर के कत्लघर (जिनमे बकरे आदि जीव काटे जाते हैं) बन्द रहें।

यहाँ पर यह काम होना कुछ आसान नहीं था किन्तु फिर भी आपने अपने आत्म विश्वास द्वारा यह कार्य उठाने की अनुमति दी। श्रीसंघ ने तुरन्त उसके लिये अर्जियाँ तैयार की और मेरवाड़े के सब बड़े शहरों जैसे केकड़ी, ब्यावर, नसीराबाद आदि में हस्ताक्षरों के लिये भेजदी। कुछ हस्ताक्षर अजमेर वालों

के भी लिये जिन पर अनेक हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, जैन आदि ने अपनी हार्दिक भावना दर्शाते हुए लगभग डेढ हजार हस्ताक्षर किये। यह प्रार्थना पत्र डिप्टी कमिश्नर साहब की मार्फत चीफ कमिश्नर साहब के पास भेजा गया जो पहले से ही महाराजश्री के गुणों से प्रभावित होचुके थे। आपने इस प्रार्थना पत्र पर अपनी सहानुभूति दर्शाते हुए म्यूनीसिपिल कमेटी के विचारार्थ भेजी। ता० १०-६-४२ को म्यूनीसिपिल आफिस में इस विषय की श्रीमान् रा० ब० सेठ भागचन्दजी सोनी M. L. A. O. B. E. की अध्यक्षता से मीटिंग हुई जिसमे निर्विवाद सर्व सम्मति से प्रार्थना पत्र स्वीकृत हुआ और अनन्त चतुर्दशी के दिवस ( कत्ल खाना ) बन्द रखने विषयक प्रस्ताव के पास होने की सूचना सारे जिले भर में देदी गई।

Certified Copy of the extract from the proceedings of an ordinary meeting of the Ajmer Municipal Committee held in the 9th September 1943

*Resolution No 34*

With the Consent of the house, the representation submitted by the Jains, requesting that no animals be slaughtered on Bhadwa Sudhi 14th ( Monday the 13th September 1943 ) on account of the religious significance of the day, was taken up for Consideration out of Agenda The house was also informed of the financial Assistant to the Chief Commissioner s letter No 21-II ( C. C. ) dated the 8th September 1943

The house agreed unanimousely that it may be closed on the 13th instead of Friday the 17th September 1943.

Seal of
Municipal Committee.

True Copy.

Sd. RAMCHANDRA,

*for Secretary*

*Municipal Committee, Ajmer.*

इस अवसर पर मीटिंग वाले दिन म्यूनीसिपल आफिस के नीचे प्रदर्शन के रूप में अनेक जैन भाई जाकर उपस्थित हुए जिनमें सब से अधिक संख्या केसरगंज के दिगम्बर जैन जैसवाल जैनियो की थी।

लगभग सब जगह सूचना भली प्रकार पहुँचाई गई व इस कार्य मे बहुत अंशो तक सफलता भी मिली।

वास्तव मे यह कार्य बड़ा ही धार्मिक और प्रशंसनीय हुआ है। यदि अगले वर्षों यहां की समाज ने थोड़ा सा भी इस ओर परिश्रम किया तो इस मे सफलता प्राप्त होना दुर्लभ नहीं है। मुनिश्री को इस कार्य के लिये जितना भी धन्यवाद दें थोड़ा है।

## ट्रैवर टाउनहॉल में व्याख्यान

ऊपर लिखे अनुसार शुभ कार्य से जनता को महाराजश्री के दर्शन करने एवं व्याख्यान सुनने की हार्दिक इच्छा हुई और इसके लिये कई महानुभावों ने अपनी यह भावना श्रीसंघ से कह कर महाराजश्री का सार्वजनिक भाषण ट्रैवर टाउनहाल मे कराने की प्रार्थना की।

श्रीसंघ ने इसके लिये आयोजन किया और १२ सितम्बर को ६ बजे टाउनहाल मे महाराजश्री के व्याख्यान सम्बन्धी सूचना नोटिसो द्वारा जनता मे प्रकाशित करदी।

योजनानुसार ठीक समय पर व्याख्यान प्रारम्भ हुआ और महाराजश्री ने उस दर्शकों से भरे हुए टाउनहाल में ऐसा सारग-

झांसी, नडोग, कांगला, श्रावली, झाबुआ, जगरावा, उदयपुर मेवाड़, पंजाब, गुजरात, मालवा, राजपूताना, यू०पी०, सी०पी०, बरार, खानदेश आदि २।

## श्री विजय महावीर नवयुवक मण्डल सीतामऊ का आगमन

विक्रम सम्वत् १९९८ मे जैन धर्म भूपणजी के कर कमलों द्वारा चतुर्मास मे यह मण्डल स्थापित हुआ था। इस मण्डल ने समाज की काफी सेवा बजाई है। संगीत, पीपलोदा, मन्दसोर आदि अनेक जगह से पारितोषिक व स्वर्ण चाँदी के पदक भी मिले हैं। जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज ने इस मण्डल की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। अभी चित्तोड़ होता हुआ मडल जन्मदाता मुनिश्री के दर्शन के लिये यहां हाजिर हुआ था मण्डल के ३५ टिकिट थे, यहा पर मण्डल का उचित स्वागत किया गया। २ रोज तक तमाम शहर मे मय ड्रेस के (साफा, नेकर, कोट, मोजा, बूँट) मडल ने जलूस निकाले थे, यहा के प्रसिद्ध सेठ राजासाहिब उमरावमलजी लोढा ने मण्डल को भोजन के लिये निमन्त्रण दिया, बाद मे ५१) रुपये भेंट स्वरूप प्रदान किये। मंडल आपका आभारी है। श्री जैन मनोहर पुस्तकालय उदयपुर की ओर से ५१) रुपये व चाँदी के पदक सभी मेम्बरों को प्रदान किये। मडल ने इस साल दशहरे पर होते हुए कई बलिदानो को बन्द करवाया है। दानी महाशयों को भूलना न चाहिये।

आज का समय बड़ा ही हर्षोत्पादक और अपूर्व था कि जिनमें सदा झगड़े होते रहे हों उन्हीं के गुरु इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठें और उपदेश दें। बाद मूलचन्द्रजी बोहरा व हरकचन्दजी सूराना के भाषण हुए बाद श्री शान्तिचन्द्रजी साहब ने खड़े होकर शोक प्रस्ताव पास किया।

बाद में मुनिश्री विजयचन्द्रजी महाराज ने ॐ शान्ति की ध्वनि बुलवाते हुये सभा विसर्जित हुई।

## प्रतिष्ठित सज्जनों की मुनिश्री से भेंट

श्रीमान् दीवान बहादुर हरविलासजी सारडा M L A. से मुनिश्री का मिलना हुआ अब आप काफी वृद्ध हो चुके हैं आप करीब १० वर्ष तक देहली लेजिसलेटिव-असेम्बली में मेम्बर रह चुके हैं। आपकी विद्वता अलौकिक है, आपने इंगलिश हिन्दी की ऐतिहासिक कईएक पुस्तकें परिश्रम करके लिखी है, आपकी पुस्तकें इंगलेण्ड के स्कूलों के कोर्स में भी ली गई है, आपका सब से उच्च काम यह है कि लेजिसलेटिव एसेम्बली में बड़ा ही कष्ट उठाकर गवर्नमेंट आफ इंडिया से बाल विवाह निषेधक कानून पास करवा दिया जो Sarda Act के नाम से मशहूर है। आप इस वक्त परोपकारिणी सभा के Hon Secretary है आपने मुनिश्री से कई एक शंकाओं का समाधान किया, करीब १ घंटे तक मुनिश्री से वार्तालाप कर बड़ी ही खुशी प्रगट की निम्नोक्त मानपत्र भेंट किया आपने अपनी रचित तमाम पुस्तकें श्री जैन मनोहर पुस्तकालय उदयपुर को अपनी ओर से प्रदान की इसके लिये पुस्तकालय के सेक्रेटरी आपको सादर धन्यवाद देते हैं।

इन्दोर, बीकानेर, रतलाम आदि के भूतपूर्व दीवान साहिब सर सिरहमलजी बापना के० टी०, सी० आई० ई० वजीरुद्दौला राय बहादुर, वर्तमान दीवान अलवर स्टेट आप कुछ दिनों से यहीं विराजते हैं। आपने मुनिश्री के दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट की।

श्रीमान भूतपूर्व दीवान साहिब बलवन्तसिंहजी कोठारी के सुपुत्र गिरधारीसिंहजी कोठारी गिरवा हाकिम उदयपुर आपने भी यहां पर दर्शनों का लाभ लिया।

The Regional Food Commissioner Rajputana Region—Sir Abdul Hamid I. C S, O B. F. आपने ता० ३० सितम्बर १९४३ को मुनिश्री का व्याख्यान क़रीब १ घंटे तक श्रवण किया व मुनिश्री के लिये अत्यन्त श्रद्धा प्रगट की।

HAR-NIVAS
CIVIL LINES AJMER
15th November 1943.

DIWAN BAHADUR
Har Bilas Sarda

Manoharlalji Maharaj is a very learned Jain Sadhu. His discources on the Jain religion are learned disquisitions on doctrines of that faith. He is very courteous and couciliating and has winning manners. His knowledge of the Jain faith is great, and his attitude towards other religions is very tolerent as befits one who preaches Ahimsa and good-will towards all living beings.

(Sd) HAR BILAS SARDA.

## विजयनगर, केकड़ी आदि के बाढपीड़ितों की सहायता करने वाले सज्जन

आली जनाब साहबजादा खुरशीद अहमदखां साहिब बहादुर I. C. S. चीफ कमिश्नर अजमेर-मेरवाडा।

प्रिडमूर साहिब–डिप्टी कमिश्नर अजमेर-मेरवाडा, असिस्टेन्ट कमिश्नर राव बहादुर ओंकारसिंहजी व आर्य प्रतिनिधी सभा राजस्थान मालवा के प्रधान देशभक्त कुँवर चाँदकरणजी शारदा मेयो कालेज क्षत्रिय महासभा के स्वयंसेवक इसके अलावा अजमेर, नसीराबाद, ब्यावर, जेठाणा आदि की पब्लिक ने भी उन बाढग्रस्तो को जिनके पास पहिनने को वस्त्र, खाने को भोजन रहने को मकान बीमारो को दवाई आदि का प्रबंध न था उन्हे पूर्णरूप से सहायता पहुँचाई इस जगह हम नसीराबाद की फौजी मिलिट्री को भी नहा भूलेंगे जिन्होंने अपनी मोटरें हर समय उन बाढग्रस्तों के लिये तैयार रखी उपरोक्त सभी महानुभावों को सादर धन्यवाद दिया जाता है। जैनधर्म भूषण मुनिश्री ने अपने उपदेश द्वारा जनता से काफी सहायता पहुँचाई थी।

## अजमेर मेरवाडा कतलखाना बंद कराने वाले सहयोगी

श्रीमान चीफ कमिश्नर साहब, व डिप्टी कमिश्नर साहब, श्रीमान रायबहादुर साहब भागचन्दजी सोनी O B. E M. L. A. चेयरमेन म्युनीसिपल कमेटी, हेमचन्दजी सोगानी एडवोकेट व अन्य म्युनीसिपल कमिश्नर, अलावा अजमेर, ब्यावर, नसीराबाद, केकड़ी टाटगढ़ आदि की पब्लिक इत्यादि सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। जिन्होंने साम्प्रदायों के मत भेद को दूर कर दृढ़ता करने की उदारता दिखाई थी।

# विजयादशमी (दशहरे) पर सिरोही स्टेट में जीव हिंसा बन्द

श्रीमान राजा बहादुर लेफ्टीनेन्ट विश्वनाथ शारणसिंहजी की प्रार्थना और जैन धर्म भूषण मुनि श्री मनोहरलालजी महाराज की प्रेरणा व आदेशानुसार दशहरे पर होने वाले हजारों जीवों का बलिदान सारी सिरोही स्टेट में इस वर्ष पूर्णतया बन्द रहा और आगे भी आशा है कि यह इसी प्रकार बन्द रहेगा एतदर्थ श्रीमान राजा बहादुर साहब व महाराजश्री को हार्दिक धन्यवाद।

## अजमेर मेरवाड़ा से पशु निष्कासन बंद

महाराजश्री की भावनानुसार व श्री जैन सुधारक प्रेस अजमेर के मालिक श्रीमान केशरीमलजी भाडावत के शुभ प्रयत्न से अजमेर-मेरवाडा से बम्बई आदि के स्लाटर हाउसों (कतलखानों) में मांस के लिये वध होने को जाने वाले लाखों पशुओं का गवर्नमेन्ट ने निष्कासन बन्द कर दिया है और इसका कानून बनाकर अमल में भी लाया जाना शुरू होगया है जिससे अनेक जीवों की रक्षा हुई। श्रीमान केशरीमलजी भाडावत का प्रयत्न सराहनीय है।

साथ ही मुनिश्री के चातुर्मास के समय से स्थानीय आफीसरों ने साप्ताहिक छुट्टी का कानून यहाँ के स्लाटर हाउसों व मांस की दूकानों के लिये भी लागू कर दिया है जिससे प्रति सप्ताह शुक्रवार के दिन ये बंद रहते हैं और इस प्रकार अनेक जीवों को अभय दान मिलता है।

इस सूचना की नकल निम्न आशय की है जो हम यहां पर
मेर-मेरवाड़ा के आफीसरों और इस्तमरारदारों व जनता की
नकारी के लिये ज्यों की त्यों देते हैं:—

*Chief Commissioner requests all the officers, officials, Istmarardars etc. of Ajmer-Merwara as follows*—

*Dated Ajmer, 5th November 1943.*

His Holiness Muni Shri Manoharlalji Maharaj Sahib is a Jain Sadhu devoted to the cause of spiritual uplift. I request that when touring in Ajmer Merwara, he may be given all possible assistance in the prosecution of his mission, such as making arrangements for meetings which he may like to address. The tenets of the Jain faith have a universal appeal and His Holiness has a just claim for help from all castes & creeds.

Sd S KHURSHID
I C S
*Chief Commissioner,*
*Ajmer-Merw*

# विधवा
या
# स्त्री समाज का बहिष्कृत अंग

संकलियता—मुनि श्री विजयचन्द्रजी महाराज "रसिक"

स्त्री समाज का एक ऐसा अंग अविशिष्ट रह गया है उ एक प्रकार से बहिष्कृतों की भांति जीवन व्यती कर पुरुषों के अवशिष्ट अत्याचारों का पात्र बन हुआ है, स्त्री समाज के इस अंग के सम्बन्ध कुछ लिखने के पूर्व हम दो एक कवियों के काव्यांश द्वारा पाठकों का मनोरंजन तो नहीं, हां, भावोद्बोधन करन चाहते हैं। अच्छा तो सुनिये:—

जग चिता को तेज जलादे, यह प्रकाश तो है धीमा।
दीख पड़े तेरी करतूतें, हत्यारी न्यारी-न्यारी॥
चिन्ता की जीवित आहुतियां, आकृतियां प्यारी २।
बिखरे बाल, भाल है सूना, इनको दूना लूटा है॥
पहले जीवन-धन छूटा, फिर लाल हृदय का छूटा है।
दुर्गतियों की प्रतिमाएं हैं, पति हीना दीना सतियां॥
पास पड़ी सुख की घड़ियों की, स्मिन विहीन ये हैं स्मृतियां।
छिन्न देवता के चरणों की, शरण पड़ी करुणावलियां॥
निरानन्द निश्चल नयनों में, पड़ा रही शोकां जलियां।
हम जीती जलती जाती हैं, जीवन हुआ श्मशान हमें।
अब तो सहा नहीं जाता है, दे मैया विषपान हमें॥

या अपना निर्मूल हुए हैं, मरने हैं मर जाने दे।
शुभ चिन्हों से रहित देह यह, गिद्धों को खा जाने दे॥
विधवाओं की देख दशा तू, मनमें कुछ करुणा लाना।
माँ तुझ में है यही प्रार्थना, अब न पुत्रियाँ उपजाना॥
यदि जावें तो दूर फेंकना, उनको दूध पिलाना मत।
भूल प्यार मत करना उनको, अपनी गोद खेलाना मत॥
फिर भी जीवें तो विवाह का, उनको नाम सिखाना मत।
ब्याह हुआ तो विधवा होगी, माँ यह दृश्य दिखाना मत॥
हिन्द देवियो तेरी लाखों, ललनायें लाचार हुईं।
कहता है संसार—"अभागी", हैं दुनिया को भार हुईं॥
किसे हाय इनकी चिन्ता है, डायन हैं मर जावें ये।
कोई नहीं सहारा देता, भले कलंक लगावें ये॥
चाहे अपने चित्कारों से, नभ मंडल दहलावें ये।
चाहे अपनी गर्म आह से, हिन्दु जाति जलावें ये॥
जहां एक सीता, सावित्री, दमयन्ती उद्धार करें।
तहां हाय! लाखों ललनायें, विधवा हो ये मौत मरें॥
आंख मूंद हिन्दू समाज तू, स्वेच्छाचार सिखा इनको।
या आशा का संदेशा दे, विजयी मार्ग दिखा इनको॥

( श्री शारदा से सकलित )

आइये पाठक अब आपको एक हिन्दू बाल-विधवा की दु[illegible] पूर्ण अवस्था का हृदय द्रावक चित्र दिखाएँ, सुनिये वह क[illegible] कह रही है —

मौत की ख्वाहाँ जान की दुश्मन, जान पै अपनी आप अजी[illegible]
[illegible]ने नहीं सकती तङ्ग हूँ याँ तक, और रोऊँ तो रोऊँ कहाँ[illegible]

बात से नफरत काम से वहशत, टूटी आस और बुझी तबियत।
आबादी जङ्गल का नमूना, दुनियाँ सूनी और घर सूना।
थक गई मैं दुख सहते-सहते, थम गए आँसू बहते-बहते।
वह चैत औ फागुन की हवाएँ, वह सावन-भादों की घटाएँ।
वह गरमी की चाँदनी रातें, वह अरमान भरी बरसातें।
किससे कहूँ किस तौर से काटी, खैर कटी जिस तौर से काटी।
आस बँधी लेकिन न मिला कुछ, फूल आया और फल न लगा कुछ।
रह गया देकर चाँद दिखाई, चाँद हुआ पर ईद न आई।
ऋतु बदली पर हुई न बरसा, बादल गरजा और न बरसा।
फल की खातिर बरछी खाई, फल न मिला और जान गँवाई।

हृदय पर हाथ रखकर इन विधवाओं की अवस्था का वर्णन—सच्चा वर्णन—कवि भी नहीं कर सकते। जिन्हें ईश्वर ने आँखें दी हैं, वे आएँ और हिन्दु-समाज में इन दीना, हीना और पति विहीना नारियों का निरीक्षण करें। हमारा तो विश्वास है, जब वे सच्चे हृदय से उनकी दशा देखेंगे कि स्त्री-जाति पर होने वाले सभी अत्याचार इसके आगे तुच्छ हैं। एक तो स्त्री-समाज वैसे ही अपनी अधोगति को प्राप्त हो रहा है तिस पर भी उसने लाखों नहीं, करोड़ों की संख्या में अपने ही एक अङ्ग को बहिष्कृत कर दिया है, दूर फेंक दिया है। देखिए 'स्त्रियों की स्वाधीनता' नामक पुस्तक में लेखक ने कैसे मर्मस्पर्शी शब्दों में लिखा है:—

हिन्दू विधवाओं की संख्या कुछ कम न समझना। देश की यह सत्यक विधवाएँ हम पुरुषों की दया और सहानुभूति की लालायित दृष्टि से निहारती हैं। जितनी हमारे देश में विधवाएँ हैं, उतनी या इसी के लगभग सर्बिया, माण्टेनिग्रो, यूनान और

आदर्श उपकार दिग्दर्शन

Sri Hindva Surya Aryakul Kamal Divakar, Dam-Ikbal-Hu His Highness Maharana Sahib Bhoopal Singhji G. C. S. I., K. C. E. I., Udaipur (Mewar).

श्री हिन्दवा-सूर्य आर्य-कुल कमल-दिवाकर दाम-इकबाल-हु, हिज हाईनेस महाराणा साहब भूपालसिंहजी जी० सी० एस० आई०, के० सी० ई० आई०, उदयपुर (मेवाड़)

Sasta Sahitya Press Ajmer

ग्लान सरीखे स्वाधीन राष्ट्रों में समूची जन-संख्या होगी। एक
विधवा की स्वाधीनता पद-दलित होने पर इतना ब्रह्माण्ड,
सा हो गया। परन्तु यहाँ तो विधवाओं
विधवाओं महासमर ...उनके उद्धार की बात है तो
की स्वाधीनता की बात नहीं है, ... अगणित पति विहीना स्त्रियाँ
की कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। ... रोदन कर हिमालय का
...ल देश के अन्तःपुरों में मूक रोदन कर भगवान को
...वित करती हैं और अपने करुण-क्रन्दन से भगवान को
...लय बना रही है। खूब विचारो, उनकी गुहार सुनने वाला
...र में कोई नहीं है........।

किसी अभागिन का पति-विहिना होना मानो संसार विहीना
होना है। फिर जैसे न वह संसार की और न संसार उसका।
वह ऐसा हँसता हुआ सुखदायी संसार? मगर उसके लिए धूल
के बराबर? संसार के एक कोने पर खड़ी होकर अभागिनी सब
को देखती है और अपने को एक अभागा राह चलतू बटोही
खयाल करती है। माता-पिता दस-बारह वर्ष की बालिका का
विवाह कर दें और वह कमबख्त? दूसरे ही दिन विधवा हो जाय
तो इसमें बालिका का क्या दोष है? उसके (पति के) माता-पिता
और कुटुम्बी जन थे, सबने मिल कर पति को मरने से क्यों न
बचा लिया? अब जोर है उस गुड़िया खेलने वाली लड़की पर?
जन्म भर अभागिनी विधवा रहे, और जो कभी मुँह से 'उफ'
निकाले तो उसने मानो कुल का नाम डुबो दिया। पति के मर
जाने का सारा प्रायश्चित उसी एक अभागिनी पर डालना, इस
देश में चाहे जो कहा जाय, परन्तु संसार के सभ्य देशों में तो
...घोर अत्याचार कहेंगे। आज अगनित विधवाओं का अभि-
...प भारत को बोझों दबा रहा है, और भारत न जाने किस

...स के लिए बेचारी बालाओं का जीवन सदा के लिये नष्ट कर देते हैं। उनका सौभाग्य दीपक चिरकाल के लिए बुझा देते हैं। हम उन बेचारी अनाथ बालाओं को यौवन समुद्र में उनकी नई तरङ्गों में, प्रेम या पिपासा के भीषण नद में छोड़कर चल बसते हैं। हम नहीं जानते कि उनका जीवन कैसे व्यतीत होगा, वे सुकुमारी बालाएँ जिन्होंने अभी जीवन का कुछ भी सुख नहीं देखा है, जिनके यौवन की कली अभी खिल ही रही है, क्योंकर अपना ब्रह्मचर्य स्थिर रख सकेंगी ?

यह तो एक प्रकार से वैवाहिक अत्याचार है, किन्तु अपनी भूल से या दैवी कोप से विधवाओं की जो अवस्था है हमे उसी पर विचार करना चाहिए। हमे जानना चाहिए कि प्रथमत: स्त्री-समाज वैसी ही पुरुषों के अत्याचारों से पीड़ित है, तिस पर भी विधवा-समाज तो स्त्री, पुरुष, दोनो की ही दृष्टि मे पतित हो जाता है। विवाहित अवस्था में तो वे केवल पुरुषों के अत्याचारों को ही सहती थीं, परन्तु अब तो समाज मे उन्हें कहीं स्थान ही शेष नहीं रहा है। विधवाएँ चाहे वे वृद्ध हों, प्रौढ़ा हों, युवती हो अथवा बालिका हों सब एक ही श्रेणी मे गिनी जाती है, अर्थात् कोई भी विधवा, समाज की दृष्टि मे मान्य नहीं है सभी पतित है, सभी त्याज्य है, और सभी घृणा की पात्र हैं। हाँ, अन्तर है एक बात मे। विधवा की अवस्था जितनी कम होती है, अत्याचारों का उस पर उतना ही आधिक्य होता है। प्रौढ़ा और वृद्ध-विधवाएँ जिन सङ्कटों से बच जाती है युवती और बाल-विधवाएँ उनके घोर चक्र में पड़कर अपना जीवन नष्ट कर देती है। जरा बाल-विधवाओं की अवस्था पर विचार कीजिए। देश मे बालविधवाओं की सख्या कुछ कम नहीं है। और वैसे तो प्रत्येक गृह मे

न्दगी के दिन बिताती है। एक ग्यारह वर्ष की बालिका इसी
प्रकार उस कोमल सुकुमारावस्था में ही सौभाग्यहीन होगई।
बहुत वर्षों तक ससुराल वालों ने कोई खबर नहीं ली। तब माता
ने उपयुक्त समझ एक व्यक्ति को साथ कर उसे ससुराल भेज
दिया। वहाँ उसका सत्कार होना तो दूर रहा, उलटे ससुरजी ने
साफ कह दिया कि मैं तो अपने पुत्र की मृत्यु के साथ ही इसे भी
मृत समझ चुका हूँ। यहाँ इनका कोई काम नहीं है, इसे वापस
ले जाओ। अब क्या किया जाता? फिर बेचारी अपने मायके
चली आई और सब की मरजी मात्र कर दिन बिताने लगी।
इसी समय उसके माता-पिता का देहान्त हो गया। कुछ दिन
बीतते न बीतते भावज ने उससे लड़ना आरम्भ कर दिया और
डाकन हत्यारिन आदि कहने लगी। भाई भी रुठ गया। वह बोला
"हमारे पास तेरा गुजारा नहीं हो सकता और न हम तेरा पालन
कर सकते है। यह रास्ता पडा है, जहाँ चाहे चली जा!" आपही
सोचिये न्याय कीजिए, उसकी इस दुरावस्था की कल्पना द्वारा
अनुभव कीजीए। इसमें उस दीना हीना पति विहीना बालिका
का क्या दोष था? क्या उसने अपना सौभाग्य स्वयं नष्ट कर
दिया? क्या उसके माता पिता और भाई आदि का इसमें दोष
नहीं है? क्यो इतनी अल्पायु मे उसे सौभाग्यवती बना देने की
उमग छागई? क्यों न उसे और कुछ काल तक कौमार्यव्रत धारण
करने दिया? फिर ससुरजी और उनके घर के लोग क्या अन्यायी
नहीं हैं? क्या बालिका ने अपने पति की हत्या की है? यदि
नहीं तो उसे यो तीखी तीखी सुनाकर जले पर नमक छिड़कना
क्या पाप नहीं है? सब कुछ है, पर सुनता कौन है? उनकी इस
दुख भरी आवाज पर कान कौन देता है? सूरत की ११ वाल-

होने दीजिए, इसी में समाज का कल्याण है। स्त्री समाज यह बहिष्कृत अङ्ग महादुखी है। आप कहने के लिए भले शास्त्रों की दुहाई दें और यह बतलाएँ कि चाहे जिस कारण से, जब स्त्रियाँ वैधव्य को प्राप्त होगई हैं, तब उनका धर्म है कि वैधव्य के कठोरव्रत का संयम से पालन करें। अवश्य ही यह नियम उन विधवाओं पर लागू हो सकता है जो संसार के सुख को समझ गई हैं, जिन्हें सन्तान भी है, अथवा जो यथेष्ठ पति-संसर्ग में रह चुकी हैं। किन्तु उन नवयौवनाओं से भी क्या आप ऐसे ही कठोरव्रत की आशा रखेंगे, जिनका विवाह हुए कठिनाई से एक वर्ष भी न बीता था कि विधवा होगई? बतलाइए, वे क्या करेंगी? हम आप से पूछते हैं, आपने इस भयकर सामाजिक पाप पर भी कभी सच्चे हृदय से विचार किया है? किसकी भूल से यह महा भयकर अत्याचार हो रहा है? क्या आप नहीं जानते कि ये विधवाएँ वास्तव में बहिष्कृत जातियों की तरह ही अपमान, भर्त्सना और प्रवञ्चना की पात्र बनती हैं? इन विधवाओं के साथ देश की कितनी बड़ी जन संख्या है, जिसे आपने एकदम निर्वीर्य, निस्सत्व और निरुपयोगी बना रक्खा है। आप यों तो विधवाओं की बातों पर शास्त्र की दुहाई देने लगते हैं, पर क्या शास्त्र में यह भी लिखा है कि विधवाओं की इस प्रकार दुर्दशा करो, उन्हें अपमानित करो, उन्हें अमंगल सूचक मानो और उनका जीवन पशु से भी बदतर बनादो? क्या हम झूठ लिख रहे हैं? आँखें हो तो देख लीजिए। विधवाएँ अपने पापी पेट के लिए, मौत की भूखी होने पर भी मौत न होने के कारण, अपनी जिन्दगी के शेष दिन काटने के लिए क्या-क्या नहीं करती? वे तमाम घर का काम और सबकी सेवा तथा खुशामद

क अभी उसने पति-सहवास का सुख ही नहीं देखा है तो विरह-व्यथा भी वह क्या जाने। जो विधवाएँ, सन्तान वाली हैं वे अपने स्वर्गीय पति की झलक तो देख लेती हैं, इससे उन्हें कुछ तो सन्तोष हो ही जाता है। पर ये अधमरी विधवाएँ किस आशा पर रहें? उनके बराबर तो अभागा कोई नहीं है, अपने इस मानसिक कष्ट को वे प्रकट नहीं कर सकतीं। कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति उनकी मर्म-व्यथा को नहीं समझ सकता। यही नहीं, कभी कभी यदि वे कुछ कह बैठें तो उनकी बातों का विचित्र अर्थ लगा लिया जाता है, जिनके कारण उन्हें दुख और लज्जा का पात्र बनना पड़ता है। इसी से वे दिल की लगी दिल ही मे रहने देती हैं। वे अपने आन्तरिक क्लेश और वैराग्य को दबकर हँसते हुए के साथ हँस देती हैं और रोते हुए के साथ जी भर के रो देती है। एक दिन जिस घर मे वे पैदा हुई थीं, बड़े लाड-प्यार से पाली गई थीं, बड़े-ठाट बाट से व्याही गई थीं, आज वही घर उन्हे पराया हो जाता है, वही घर उन्हे काटे खाता है, उसी घर मे वे गैरों की तरह अपना जीवन निर्वाह करती हैं अनेकों को उसी प्रकार अपने मायके का आश्रय लेना पड़ता है, बाल-विधवाओं की तरह उनके भी भरण-पोषण की व्यवस्था नहीं होती है। निस्सन्तान होने के कारण ससुराल से भी उन्हे कुछ नहीं मिलता। बहुत हुआ तो घर में रहने और रोटी खाने मात्र का उन्हें हक मिलता है। इस प्रकार प्रथम तो वे अपने सुख और सौभाग्य से हीन हो जाती हैं, दूसरे उन्हे अपमान और लाञ्छना सहनी पडती है, तीसरे उनके पेट भरने का कोई ठीक प्रबन्ध नहीं होता, फिर यदि होता भी है तो अपमान के टुकडे खाने पड़ते है, चौथे प्रत्येक शुभ कार्य से उन्हे अलग रहना पड़ता है, पाँचवे अपने धर्म और

मान की रक्षा के लिए उन्हें पद-पद पर सङ्कट का सामना करना पड़ता है, छोटे उम्र अवकुचली अवस्था में, यौवन की उमङ्ग में उन्हें वैराग्य धारण कर, कठोर संयम और व्रत साधन द्वारा समाज की आज्ञा माननी पड़ती है, मानवे स्वत्व और सम्मान विहीन जीवन व्यतीत करना पड़ता है तथा और भी न जाने कितनी आपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

समाज के हितैषी और सुधारक बन्धुओ ! सच जानिए, विधवाओं का प्रश्न यों ही टाल देने लायक नहीं है उन्हें पद दलित समझ कर दृष्टि से दूर कर देने योग्य नहीं है। विधवाओं का प्रश्न राष्ट्र के हिताहित से बहुत सम्बन्ध रखता है। सोचा तो सही जिनकी संख्या तीन करोड़ हो, वे क्या यों ही छोड़ देने लायक हैं? क्या वे जीवन धारण नहीं करती हैं अथवा क्या उनका मानवी विकारों और संस्कारों से कोई सम्बन्ध नहीं है?

सुधारकों ने इन विधवाओं के सुधार का एक ही उत्तर दिया है। उनका कथन है कि बस पुनर्विवाह कर देना ही विधवाओं के दुःख को दूर करने का उत्तम उपाय है। परन्तु, यह विचार बहुत सङ्कुचित जान पड़ता है। वैधव्य के भीतर कोई बड़ा रहस्य छिपा हुआ दिखलाई देता है। वैधव्य का उपयोग भी बड़ा है। यदि पुरुष भी एक स्त्री के मर जाने पर पुनर्विवाह का विचार न करते तो बहुत अच्छा होता। परन्तु, इस प्रकार का भी आन्दोलन कहीं भी, थोड़ा सा भी होता नजर नहीं आता।

पर, ऐसे विचार में अथवा इस विचार के अमल में आ जाने से भी बाल-विधवाओं के विलाप होने बन्द हो जायँगे? हजारों

...प भी यदि स्त्रियों के मर जाने पर स्वेच्छा पूर्वक पुनर्विवाह ... करें तो इससे जिन्हें बलात्कार पूर्वक वैधव्य भोगना पड़ता है, उन बेचारी विधवाओं को क्या लाभ होगा ? उनके लिए कौनसा मार्ग बतलाते हैं ? विधवा को पुनर्विवाह करने से हठपूर्वक रोकना क्या कोई धर्म है ? विधवाओं को ऐसी। स्थिति में पहुँचाए बिना, जिसमें कि वे अपने वैधव्य को शोभित कर सकें, क्या उनसे पवित्रता की आशा रक्खी जा सकती है ?

स्मरण रखिए:—

१—विवाह एक धार्मिक क्रिया है।

२—विधवा पूज्य है। उसका तिरस्कार करना पाप है। ...त्र विधवा का दर्शन शुभ शकुन है। उसे अपसकुन कहना ...प है।

देश बन्धुओ ? उठिए, इन तीन करोड़ अबलाओं की आहों ... कुछ तो पसीजिए। स्त्री-समाज के इस बहिष्कृत अङ्ग के सुधार ...ीर उत्थान की चेष्टा कीजिए। अन्यथा तुम्हारी उन्नति एक कल्पना है और तुम्हारा सुधार केवल दिखावा है।

अन्त में हम समाज के इस बहिष्कृत अङ्ग की अङ्क सूची देकर स्थिति और भी साफ कर देना चाहते हैं। "नवजीवन" ... विधवाओं के विषय में लिखते हुए मि० खण्डेलवाल ने सम... भारत की मनुष्य-संख्या मे निम्न-लिखित अङ्क दिए थे:—

| उम्र | विवाहित बालिकाएँ | विधवाएँ |
|---|---|---|
| एक वर्ष से कम | १३,२१२ | १७,०१४ |
| १ वर्ष से २ वर्ष तक | १७,७५३ | ८५६ |
| २ से ३ वर्ष तक | ४९,७८७ | १,८०७ |
| ३ से ४ वर्ष तक | १ ३४,१०५ | ९,२७३ |
| ४ से ५ वर्ष तक | ३,०२,४२५ | १७,७०३ |
| ५ से १० वर्ष तक | २२,१९,७५८ | ९४,२४० |
| १० से १५ वर्ष तक | १,००,८७,०२४ | २,२३,०३० |

मुसलमानों और हिन्दुओं की अलग-अलग संख्या यह है:-

| उम्र | हिन्दू | मुसलमान |
|---|---|---|
| ० से १ वर्ष तक की | ८६६ | १०६ |
| १—२ ,, | ५९५ | ६४ |
| २—३ ,, | १,५६४ | १६६ |
| ३—४ ,, | ३,[illegible]८७ | ५,८०६ |
| ४—५ ,, | १४,७७४ | १,२८१ |
| [illegible]—५ ,, | ७७,३८५ | २४,२७६ |
| १० ,, | १,८१,५०७ | ३६,२६४ |
| १०—१५ ,, | | |

ईश्वर, कैसा दारुण दृश्य है?

भिन्न-भिन्न प्रान्तों में विधवाओं की संख्या इस प्रकार है—

बङ्गाल ... . .. ... १७,५८३

[illegible]

| | विधवा |
|---|---|
| बम्बई .... .... .... | ६,७२६ |
| मद्रास .... .... .... | ५०४ |
| संयुक्त-प्रान्त .... .... .... | १७,२०६ |
| बड़ौदा .... .... .... | ७८३ |
| हैदराबाद .... .... .... | ६,७८२ |

आप ही देखें, यह कैसी भयङ्कर स्थिति है। जो इन अङ्कों को पढ़ेगा वह अवश्य रोवेगा। आप ही कहें, स्त्रियों के साथ पुरुषों का यह पाशविक अत्याचार नहीं है कि एक-एक और दो-दो वर्ष की बालिकाओं के विवाह कर दिये जाते हैं और उनके विधवा होने पर सारा जीवन उन्हे क्लेश, चिन्ता और परिताप मे बिताने का आदेश करते हैं। साथ ही जब ये बालिकाएँ अपनी पूर्णावस्था को प्राप्त होती हैं तो उन्हे पतित करने के लिए सैकड़ों प्रलोभन दिखलाए जाते हैं। फिर उनके जरा इधर-उधर होते ही कलङ्क और लाञ्छन का टीका लगा कर उन्हे जाति-च्युत और समाज से बहिष्कृत कर देते हैं। हा हन्त! स्त्रियो को स्वयँ ही जाल मे फंसाएँ और स्वय ही उन्हे फस जाने का अपराधी बनाएँ। यह पशु-लीला, यह राक्षसी अत्याचार भारतीय स्त्रियाँ कहाँ तक सहती रहेंगी। हाय! उनकी कथा कौन सुनेगा? किसी ने सच ही तो कहा है:—

सुनेगा कौन दर्दे दिल की दर्दनाक कथा।
कि जिसकी आह से कलेजा सङ्ग फटता है॥

"अबलाओं पर अत्याचार से उद्धृत"
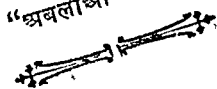
# बंगाल की दयनीय दशा

आज संसार महा संकट में होकर गुजर रहा है समस्त विश्व में भयंकर युद्ध हो रहा है। यूरोप के हाथ रक्त-रंजित हैं, इधर पूर्व में जापान ने पश्चिम की नकल कर अपने हाथ खून में रंगे हैं। विज्ञान ने मानवता को उन्नति के ऊंचे शिखर पर चढ़ाकर पतन के गहरे गड्ढे में गिरा दिया है। संसार विनाश की ओर बड़ी तेजी से अग्रसर हो रहा है। हमारा धार्मिक देश भारतवर्ष भी, जहां अहिंसा, सत्य व शान्ति के कितने ही अवतार हुए हैं, इस विनाश में सम्मिलित है।

आज हिन्दुस्तान के कोने २ से दुख की गाथाएँ सुनाई देती हैं। चारों तरफ हा हा कार मचा हुआ है। कहीं भयंकर बाढ़ आने से हजारों मनुष्य और पशु पानी में बह गए हैं। विजयनगर की बाढ़, जिसे "रेगिस्तान में बाढ़" कहना चाहिए, राजस्थान में सदा के लिये याद रहेगी। बनारस और मद्रास में भी बाढ़ आने से बहुत हानि हुई है। हजारों मनुष्यों के बेकार हो जाने से, मकान गिर जाने से और सर्दी का मौसम आजाने से बाढ़ पीड़ित इलाकों की हालत और भी खराब होगई है।

सभी वस्तुओं के मूल्य में अति वृद्धि हो जाने से जीविका चलाना एक बड़ी समस्या हो गई है। अनेक वस्तु पैसा देने पर भी अप्राप्य है। अन्न और वस्त्र की समस्या सबको बुरी तरह परेशान कर रही है। भारत इस समय एक गरीब राष्ट्र है, २५

प्रतिशत मनुष्य एक एक बार ही खाना खाते हैं। इसलिये यह भयंकर मँहगाई गरीबों को बुरी तरह पीस रही है। आज ट्रावन-कोर, मलाबार, उडीसा, विहार और बंगाल आदि प्रान्तों में अनाज का अकाल पड गया है। इनमें सब से दर्दनाक हालत ...ाल की है। यह एक आश्चर्य पर दुर्भाग्य की बात है कि भारत-...र्ष जहां दूध और दही की नदियां बहती थी और अनाज के भंडार भरे रहते थे, वहां आज मनुष्य नाज के लिए तरस रहे हैं और अनेक स्त्री और पुरुष भूख की वेदि पर अपनी बलि दे रहे हैं।

हरिजन सेवक संघ के मन्त्री श्री ठक्कर बाप्पा ने बंगाल व दूसरे दुर्भिक्ष पीड़ित इलाकों की दशा पर रोशनी डालते हुए कहा है कि बंगाल आज मृत्यु के मुख मे पडा हुआ है। वास्तव मे बंगाल पर आज एक घोर सकट पडा है। ऐसी दर्दनाक दशा का इतिहास मे कोई भी उदाहरण नही मिलता है। लोग अन्नाभाव के कारण आत्म हत्या कर रहे हैं। स्त्री पुरुष को और पुरुष स्त्री को कत्ल कर रहा है। माताएँ अपने बच्चों को कत्ल कर रही हैं। कोई उन्हे कुछ पैसे में बेच रही हैं। कोई उन्हे सडको पर छोड कर भाग रही हैं। कोई उन्हे नदी मे फैंक रही हैं। कई स्त्री पुरुष एक साथ रेल के पहियों पर सोकर अपने प्राण दे रहे हैं। समाचार पत्रो मे प्रकाशित आकडो से ज्ञात होता है कि बंगाल मे २००० मनुष्य प्रति सप्ताह भूख से मर रहे हैं। पर जो आँकडे "स्टेटसैन" अखबार ने प्रकाशित किये है, उससे मालूम होता है कि बंगाल मे १०००० मनुष्य प्रति सप्ताह मर रहे हैं। के० सन्तानम ने अपने २७ अक्टूबर सन् १९४३ के लेख मे मृत्यु-सख्या २५ हजार प्रति सप्ताह बतलाई है। इन सब आंकड़ो से यही साराश निकाला जाता है कि बंगाल की दशा बहुत ही ज्यादा हृदय-विदारक है।

(०) साहूकार हैं और जिनके पास ३ बीघा जमीन भी है, अपना गुजारा न चला सके और उनको अपने परिवार के २० प्राणियों के लिए गत ३ मास मे १२००) कर्ज लेने पडे।

श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित ने जो प० जवाहरलालजी नेहरू की बहन है, बगाल का दौरा कर, समाचार पत्रों में बयान दिया है कि गावों की हालत सबसे ज्यादा खराब है। मदद गावों में बहुत कम पहुँची है। हजारों प्राणी रोज परलोक सिधार रहे हैं। लाशों की संख्या बढ़ जाने से उनको नदी मे बहाया जा रहा है। बच्चों की तबियत ठीक होने पर अस्पतालों मे निकाल कर सड़को पर भाग्य भरोसे छोड़ा जा रहा है। जगह २ मलेरिया और आव-दस्त की महामारियां फैल रही हैं। डाक्टरी-सहायता बहुत कम है। कुनैन तो प्राय. बिल्कुल अप्राप्त है।

क्षुधा-पीड़ित पुरुष स्त्रिया व बच्चे गावो से नगर व जिले में आ रहे हैं, दुबली-पतली व अर्धनग्न स्त्रिया अपने दुर्बल शिशुओं को, जिनके हाथ-पैर सूख गये हैं और चेहरों पर झुर्रियां पड़ गई हैं, गोदियों में लिए हुए देखी जाती हैं। छोटे बच्चे जब अपने फूले हुए पेटों व उभरी हुई पसलियों के साथ खडे होते हैं, तो उनकी पतली टांगें उनका भार मुश्किल से सहन कर सकती हैं। पुरुष भी भूख से जर्जर हैं, बहुत से तो केवल चलते फिरते ढांचे नजर आते हैं। ये अभागे घण्टों अपर्याप्त 'खिचडी' या 'दलिया' के लिये अपने टीन के पात्रों को फैलाये हुए धैर्य के साथ खडे रहते हैं। बहुतसी स्त्रियां तो भोजनालयों मे आने के लिये असमर्थ हैं, क्योंकि उनके बचे-खुचे चिथडे भी खोगये हैं और वे बिल्कुल नग्न हैं। वस्त्र की समस्या भी वैसी ही भयकर होने का डर है, जैसी कि भोजन की

# सच्चा युद्ध-प्रयत्न

( महात्मा गांधी )

आज हमारे सामने सबसे जरूरी सवाल भूख से पीडितों के लिए रोटी का और वस्त्रहीन गरीब जनता के लिए कपडे का प्रबन्ध करने का है। देश मे इन दोनों ही चीजो का दुष्काल है। लडाई लम्बी चली तो यह संकट और भी बढ़ जायगा। बाहर से अन्न-वस्त्र का आना बन्द हो गया है। धनिकवर्ग भले ही आज इस अभाव को अनुभव न करता हो, परन्तु गरीब लोग तो अभी से काफी तंगी में हैं। धनिकवर्ग गरीबो के शोषण से ही आज अपने आपको जिंदा रख रहा है। इसके सिवा और कोई रास्ता उसके पास नहीं है। आज इस वर्ग का गरीबो के प्रति क्या कर्त्तव्य है? कहावत है कि जो जितना बचाता है वह उतना ही कमाता या पैदा करता है। अतः जिनके हृदय मे गरीबो के लिए दया है, जो उनके साथ ऐक्य साधना चाहते हैं, उन्हे अपनी आवश्यकताए घटानी चाहिए। यह हम कई प्रकार से कर सकते है। मै उनमें से कुछ ही का यहां उल्लेख करूगा। धनिक वर्ग मे प्रमाण या आवश्यकता से कहीं अधिक ज्यादा खाना खाया और नष्ट किया जाता है।

इससे बचने के लिये हमे चाहिए कि एक समय एक ही अनाज काम मे लावें। रोटी, दाल, भात, दूध, घी, गुड और तेल आदि खाद्य-पदार्थों का—सब्जी, तरकारी और फलो के अलावा आमतौर पर हमारे घरो मे उपयोग होता है। आरोग्य की दृष्टि से यह मेल ठीक नहीं है। जिन लोगो को दूध, पनीर, अडे या मांस

# चित्र परिचय

पूज्य श्री घासीलालजी महाराज का सन्देश ज्योंही अजमेर विराजित जैनधर्म भूषण प० मुनिश्री मनोहरलालजी महाराज के पास पहुँचा त्योंही आपने शीघ्र ही उदयपुर की ओर प्रस्थान कर दिया और चैत्र मास मे उदयपुर पहुंच गये। उस समय महाराणा साहिब उदयपुर ने एक फर्मान तमाम मेवाड स्टेट मे जारी किया और उसकी एक प्रति पूज्य श्री को भेट की गई। उस फरमान की नकल पाठकों के पठनार्थ पीछे दी जाती है इससे पाठको को मालूम होगा कि प्रतापी महाराणा साहिब की पूज्य श्री के प्रति कितनी श्रद्धा एवं भक्ति है।

। है, ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मैंने ऊपर जो बतलाया
इससे शरीर को किसी प्रकार का नुकसान नहीं हो सकता।
उटे, स्वास्थ्य अधिक अच्छा होगा।

निस्सदेह भोजन-सामग्री की किफ़ायत की यही एकमात्र रीति
है। इसके सिवा और भी कई तरीके हैं। केवल इन्हीं से कोई
अवलनीय लाभ नहीं हो सकता।

गल्ले के व्यापारियों को चाहिए कि लालच और जितना
मुनाफा उठा सकें उतना उठाने की प्रवृत्ति को त्याग दें। उन्हें
यथासम्भव थोड़े-से-थोडे मुनाफे मे ही सतुष्ट रहना चाहिए। यदि
वे गरीबों के लिए गल्ले के भडार न रखेंगे तो उन्हें लूटपाट का
डर रहेगा। उन्हें चाहिए कि वे अपने पडोस के लोगो से सपर्क
नाये रखें। काग्रेसवादियों को चाहिए कि वे इन गल्ले के व्यव-
ागियों के यहाँ जायें और उन्हें यह सन्देश दें।

सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य तो यह है कि गाव के लोगो को यह
शिक्षा दी जाय कि जो कुछ उनके पास है उसे बचाकर रखे। और
जहा-जहा पानी की सुविधा हो वहा नई फसल बोने और तैयार
करने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाय। इसके लिये ऐसे प्रचार की
आवश्यकता है, जो एक बड़े पैमाने पर और बुद्धिमत्तापूर्ण हो।
यह बात प्रायः लोगो को मालूम नही है कि केला, आलू, चुकन्दर,
शकरकंद, सूरन और कुछ हद तक कद्दू ( कोहडा ) आसानी से
...नेवाली फसलें हैं और जरूरत के समय ये चीजें रोटी का
जे सकती हैं।

यदि अच्छी तरह और समय रहते ध्यान दिया जाय, तो वस्त्र
समस्या अन्न के प्रश्न से कहीं अधिक सरल है। आज कल

ने हाथ से धुन ले या बिहार की बुनियादी शालाओं में इस्तेमाल की जाने वाली धनुही पर घर ही धुन ले। यह संभव है, क्योंकि किसी के आगे बहुत-सा सूत कात डालने का सवाल तो होगा ही नहीं। अगर उन करोड़ों लोगों में से जो यह काम कर सकते हैं प्रतिदिन एक घंटा कातें तो इतना सूत तैयार हो जायगा कि देश के तमाम करघों की जरूरत पूरी की जा सकेगी।

कांग्रेसवालों के सामने यह एक बहुत बड़ा काम है। उन्हें चाहिए कि वे कुशल कातने और धुननेवाले बन जायें। धनुष-तकली बनाना भी उन्हें सीख लेना चाहिए। हरएक व्यक्ति को खुद अपने से, अपने कुटुम्ब से और पड़ोसियों से इस काम को आरम्भ करना चाहिए। अगर वे ऐसा करेंगे तो उनके इस उदाहरण का जीवनप्रद प्रभाव देखते-देखते दावानल की भांति देश में फैल जायगा और वह व्यापक हो जायगा।

जो संस्था इन प्रश्नों को सफलतापूर्वक हाथ में लेगी, वह जनता के प्रेम और विश्वास का संपादन कर सकेगी। मेरी आशा है कि सब इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। यह शांत और रचनात्मक कार्यक्रम है, इसलिए यह कम प्रभावोत्पादक नहीं है।

क्या देशी राज्यों के नरेश अपनी जनता को बिना रोकटोक के यह काम करने देंगे? क्या क़ायदेआजम जिन्ना साहब मुस्लिम लीग के सदस्यों को इस सच्चे अर्थ में राष्ट्रीय और जन-सेवा के अराजनैतिक काम में कांग्रेस के साथ सहयोग करने देंगे? अखिल-भारत चरखा-संघ के द्वारा आज २३,००० मुसलमान कत्तिनें, धुनिये और जुलाहे अपनी दैनिक जीविका उपार्जन करते हैं।

( काशी जाते हुए १९-२-४२ ) 'हरिजन' से

---

काम से, नहीं मिलाना चाहिए। मैं इससे पूरी तरह से सहमत हूँ। इसी कारण मैं इस बुरी स्थिति का दोष किसी पर नहीं लगाता और इसी भावना से प्रेरित होकर वायसराय और उनकी कार्य-कारिणी कौंसिल के सदस्यों को सुझाता हूँ कि वे इस पर गंभीर विचार करें। सरकार महात्मा गांधी के २५ जनवरी १९४२ के 'हरिजन' के 'सच्चा युद्ध-प्रयत्न' शीर्षक लेख को प्रांतीय भाषाओं छपवाकर देश भर में बटवा सकती है और यह बहुत उपयोगी है। मुझे यह विश्वास है कि यदि महात्मा गांधी की यह अपील बड़े पैमाने पर देश भर में भारतीय जनता के ध्यान में लाई जा सके तो उससे किसी दूसरी संस्था या व्यक्ति के भाषण की अपेक्षा अधिक लाभ होगा। मुझे आशा है कि राजनैतिक पक्षपात और झूठी प्रतिष्ठा सरकारी सूचना-विभाग के मार्ग में बाधक न होगी और वह एक ऐसे व्यक्ति की, कि इस सम्बन्ध में जिसकी सचाई असंदिग्ध है, भारतीय जनता से की गई शानदार अपील से फायदा उठायगा।

मैं महात्माजी के इस लेख को संक्षिप्त नहीं करना चाहता, क्योंकि उनकी अपील तो उन्हीं के शब्दों में कायम रह सकती है। दूसरे शब्दों में उसका पूरा असर पर्याप्त नहीं रहेगा। मुझे आशा है कि इस देश के सब पत्र इसे पूरा छापेंगे। यदि इसे शब्दशः तार से इंग्लैंड और अमेरिका को भेज दिया जा सके तो गांधीजी के युद्ध-प्रयत्न सम्बन्धी रुख के बारे में उनका भ्रम मिट जाय। उन्होंने जनवरी १९४२ में उस लेख को प्रकाशित करके यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दुस्तान की आर्थिक स्थिति में जो तूफान आने वाला था उसे उन्होंने बहुत पहले ही देख लिया था।

## वीर निर्वाण

तर्ज—दीवाली फिर आगई सजनी ।

दीवाली फिर आगई सजनो हाँ ! हाँ ।
वीर के मिल गुण गावें । हां ! हा ।
चरणों मे शीश झुकावे ॥ दीवाली ॥

चैत्र सुदी तेरस प्रभु जन्मे, घर घर मंगलकारी,
नृप सिद्धारथ त्रिशला माता हर्षे, अपरपारी ।
सुर, नर, इन्द्र सभी मिल प्रभु को,
मेरु शिखर नवरावें ॥ दीवाली ॥

वर्षी दान महा प्रभु देकर, संयम को अख्त्यारे !
केवल ज्ञान अलौकिक दर्शन पा जग जन्म सुधारे ।
सहकर परिषह भीम भयकर,
प्रभुजी ज्ञान सुनावें ॥ दीवाली ॥

कार्तिक वद अमावस स्वामी, अर्ध रात्रि दरम्याना ।
पाया पद निर्वाण वीर प्रभु, गौतम केवल ज्ञाना ॥
झिल मिल करते रत्न जवाहिर
... खब सजावें ॥ दीवाली ॥

तर्ज—मन साफ तेरा है या नहीं ।

भगवान महावीर जो भारत मे न आते ।
दु:ख दर्द जमाने के कहो कौन मिटाते ॥ टेर ॥

मंदिर मठों मे खूं की मचा करती होलियां ।
यज्ञो मे पशुओ की जला करती टोलियां
भगवान दया करके जो उनको न छुड़ाते ॥ दुख ॥१॥

भारत की देवियां थी बनी पैर की जूती
थी शुद्र वर्ण वाली बनी जाती अछूती
महावीर उन्हे आके जो छाती न लगाते ॥ दुख ॥२॥

बीमारी पंडितो की कहो कौन मिटाते
शास्त्रो का सही अर्थ उन्हे कौन बताते
जो. वीर अनेकान्त की बूटी न पिलाते ॥ दुख ॥३॥

महावीर अगर दुनिया मे अवतार न लेते
अय "राम" दया धर्म का उपदेश न देते
गान्धी को अहिंसा सबक कौन सिखाते ॥ दुख ॥४॥

महावीर अगर आज भी संसार मे होते
अंगरेज जर्मनो के महायुद्ध न होते
हिटलर को वही शान्ति का संदेश सुनाते ॥ दुख ॥५॥

# जागरण !

अब उठो जैनियो ! जागो ! जागो !! नया जमाना आया है ।
नव-जीवन का संचार करो, पैगाम वीर का लाया है ॥

सब मजहब वाले जाग चुके,
निज कार्य क्षेत्र में भाग चुके ।
उठ सजग बनो कुछ कार्य करो, कुदरत ने बिगुल बजाया है ॥

रण प्रांगण में आगे बढ़ कर,
रिपु कर्म से युद्ध करो भिड़कर ।
सच्चा वीरत्व दिखाने का, अनुपम अवसर यह लाया है ॥

कृतकृत्य तभी तुम हो ओगे,
जब राग द्वेष को खोओगे ।
आनन्द चित्त हो प्रेम मिलन, करने का भाव जगाया है ॥

विधवा का करुणामय क्रन्दन,
बेजोड़ वृद्ध शादी कारण ।
त्यागो बद रीति रिवाजो को, अनमोल जो नरतन पाया है ॥

तजदो कन्या विक्रय करना,
हरदम दुश्कृत्यों से डरना ।
निबलों पर करुणा भाव रखो, सत्शास्त्र सही फर्माया है ।

मितव्ययी बनो कहना मानो,
प्रिय जरा समय को पहचानो ।
जिन धर्म ध्वजा को फहराओ शुभ 'विजय' गान गुञ्जाया है ॥

तर्ज—सावन के नज़ारे हैं।

स्थायी—महावीर हमारे हैं, अहा ! अहा !!
　　नित उठ ध्यान धरो। वी ऽ ऽ ऽ रो।
दुनियां के सहारे हैं ॥ महावीर ॥

अंतरा—सिद्धारथ कुल—भूषण,
　　माता त्रिशला के। वी ऽ ऽ ऽ रो।
नयनों के सितारे हैं ॥ महावीर ॥ १ ॥

सन्देश अहिंसा का,
　　फैला कर जग में। वी ऽ ऽ ऽ रो।
पशु प्राण उबारे हैं ॥ महावीर ॥ २ ।

चंड कौशिक को तारा,
　　चंदन बाला के ॥ वी ऽ ऽ ऽ रो ॥
सब कष्ट निवारे हैं ॥ महावीर ॥ ३ ॥

जिन 'धर्म' गुलिस्ता के,
　　प्रभो ! प्रति पल पल के ॥ वी ऽ ऽ ऽ रो ॥
सुचि रास्तन द्वारे हैं ॥ महावीर ॥ ४ ॥

तर्ज—जिंदगी है प्यार की।

वीर प्रभो! वीर प्रभो! वीर गुण गायेजा।
वीर का ही नाम शुभ निशि दिन ध्यायेजा॥
खुशियाँ मनायेजा॥ वीर॥

वीर नाम ध्याइये, कर्म को खपाइये।
अष्ट कर्म नष्ट कर, शिव सुख पायेजा।
अमर कहायेजा॥ वीर॥

वख्त तो है अब चला कर सके तो कर भला।
चार दिन की रोशनी मे, 'धर्म' बीज बोयेजा।
शुभ फल खायेजा॥ वीर॥

धन्य सिद्धारथ तात, धन्य त्रिशला हैं मात।
धन्य दिन चैत्र सुद तेरस मनायेजा।
गुण ग्राम गाये़जा॥ वीर॥

# अभिनन्दन

( रचयिता-प० रत्न जगन्नाथजी, उपाध्याय, अजमेर )

श्री साधन सम्पन्न मनोहर मुनिवर ज्ञानी ।
युग-युग चलती रहे आपकी कीर्ति-कहानी ॥
तन-मन से शुभ जैन-धर्म के व्रती पुजारी ।
महिमा-मंडित अजय मेरु मही हुई हमारी ॥
नौनिधि सा उपदेश दे चातुर्मास यहाँ किया ।
हर्ष हृदय में भर दिया मुकुलित मानस कर दिया ॥
रटते हैं हम आज आपका नाम सुखारी ।
लाते हैं उर बीच भव्य गुण गरिमा प्यारी ॥
ललक दर्श की लिये दे रहे पुलक विदाई ।
जीवन सार्थक हुआ सौम्य मूरति हिय आई ।
मद-मत्सर से पूर्ण यह जीवन धन्य हुआ अहो ।
हार हृदय का मिल गया कौन अभाव रहा कहो ॥
राग द्वेष को छोड़ साधु जीवन अपनायें ।
जन-जीवन उपदेश सुधा से धन्य बनायें ॥
कीर्ति-कला कमनीय कलानिधि सी छहरायें ॥
जय जय मुनिवर आप स्वयं पारस बन आयें ।
यवन आत्मिक बन गये ऐसा उस प्रताप है ।
हो वह पुण्य प्रसून, लक्ष जिसको करना पार है ।

# श्री जैन मनोहर पुस्तकालय उदयपुर

के

## कुछ प्रकाशन

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपासक दशांग सूत्र सजिल्द | २॥।) | सामायिक प्रकाश | )॥। |
| गृह-धर्म कल्पतरु " | ॥) | आध्यात्मिक भावना | =) |
| जैनागमतत्व दीपिका " | १) | सिंध-विहार महा-उपकार | ।) |
| सत्य प्रदीप " | १) | घासीलाल गुरुगुण माला | =) |
| श्रीलाल नाम मालाकोष | ।) | " मंजुशा | =) |
| उपदेश शतक | ।) | " फरांची में द्वितीय चातुर्मास | अ० |
| शुक्ति संग्रह | ।) | दीपावली, अ० अनुपूर्वी | अ० |
| वृत्तबोध छन्दोग्रन्थ | =) | चतरदास नित्य पठन | अ० |
| | | संत समागम महात्म्य | =) |
| लक्ष्मीधर चरित्र प्राकृत सं० | ।=) | मनोहर मंगल माला | =) |
| कविता हिन्दी | =) | नवकार का पचरंग चित्रपट | =) |
| शांति नित्य पठन | ।) | विजयी विहार को० चा० | ॥—) |
| मन मोहन पुष्पमाला | —)॥। | वीरवाणी | =) |
| मनोहर चिन्तामणी | =) | मनोहर चौबीसी | =) |
| गौतम रास | =) | प्रातःस्मरणीय स्तवनावली | =) |
| व्याख्यान स्तुति गौतम० | | विजय पुष्पलता | =) |

प्राप्त स्थानः—

**मनोहरसिंह गणेशलाल महता,**

श्री जैन मनोहर पुस्तकालय, उदयपुर (मेवाड़)

**His Holiness Muni Sri Manoharlalji Maharaj**

( चित्र केवल परिचयार्थ )

जैन धर्म भूषण पं० मुनि श्री १००८ श्री मनोहरलालजी महाराज

जन्म सम्बत् १९५८ दिक्षा सम्वत् १९६७

सस्ता-साहित्य प्रेस अजमेर

* ॐ *

# आदर्श उपकार दिग्दर्शन

## संक्षिप्त जीवन परिचय

हमें हर्ष है कि हम आज एक ऐसे महात्मा का जीवन चरित्र लिख रहे है कि जिसके द्वारा जगजीवों का उद्धार होता है, और जो जिन शासन के भूषण स्वरूप सबके हृदय में वास करने वाले और सबको शान्ति देने वाले महा परोपकारी महात्मा हैं। आपका प्रारम्भिक जीवनचरित्र जब हमे कर्णगोचर हुआ तो उसमें आपके ऊपर घटी अनेक घटनायें सुनकर इच्छा हुई कि उसका कुछ थोड़ासा आभास अपने पाठकों के सामने भी आदर्श रूप मे रखे।

शायद ही कोई हिन्दुस्तानी ऐसा हो कि जिसने प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप का नाम न सुना हो, और उनकी जन्मभूमि उदयपुर के नाम से अपरिचित हो, यद्यपि यह कथा बहुत पुरानी सी होगई और उदयपुर भी अब पहले जैसा नहीं रहा किन्तु फिर भी जब अपनी दृष्टि के सामने महाराणा का चित्र खीचते हुए हम उसकी छटा को निहारते है तो मानो इस समय भी उसके हरएक चप्पे २ पर हमे महाराणा की हसती हुई मूर्ति दृष्टिगोचर होजाती है और हिन्दुत्व के आन की शान पर बलि होने वाले उस महा-पुरुष का चित्र हमारी आंखों के सामने नाचने लगता है।

वीरम् *

# सचित्र

# आदर्श उपकार दिग्दर्शन

व

## ( अजमेर-मेरवाड़े में धर्म-प्रचार )

लेखक व संग्रहकर्ता

कविरत्न पं० जगन्नाथ उपाध्याय, अजमेर

प्रकाशक

रतनचन्द चोपड़ा, मिश्रीलाल ढाबरिया
भँवरलाल नाहर, रंगरूपमल श्रीश्रीमाल

दिसम्बर सन् १९४३ ई० | मूल्य सदुपयोग | वीर सं० २४७० विक्रम सं० २०००

सस्ता-साहित्य प्रेस ब्रह्मपुरी अजमेर मे छपी ।

फुर्सत पाली और दूसरे ही दिन से पढ़ने जाने लगे। माता ने कहा और गुरुजी ने भी कहा कि विद्यारम्भ के लिये आज का दिन उपयुक्त नहीं है, जो आज के दिन विद्या प्रारम्भ करता है वह वैरागी हो जाता है किन्तु इन्होंने एक की भी बात न मानी। क्योंकि.—"कर्मगति टारि नाही टरे" जैसा होनहार होता है सब उसी तरह के योग बन जाते हैं। उस समय किसी को क्या मालूम था कि यह बालक किसी समय धर्म की सीढ़ी पर चढ कर सूर्य के समान अपने आदर्श चरित्र और ज्ञान द्वारा जगत को सच्चा मार्ग दिखाने वाला बनेगा और अपना व पर का उप-ार करके मोक्ष का मार्ग सम्भालेगा।

आखिर इनकी पढाई शुरु हुई और सिवाय पढ़ने के इस समय इनको कोई दूसरा तो मानो कार्य ही नहीं था। थोड़े ही दिनो मे आप बडी अच्छी तरह हिन्दी की कैसी भी पुस्तक को बाँचने लगे और समझने लगे।

## चरित्र नायकजी की माता

आपके पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात से ही आपकी माता श्रीमती सज्जन कुँवरजी ने मानो संसार से ऊब कर वैराग्य धारण कर लिया था, किन्तु उन पर उनके दो बच्चों और बड़े लड़के की विधवा पत्नी के पालन पोषण का भार होने से उन्हे संसार मे रहने की विवशता का कष्ट उठाना पडा किन्तु फिर भी वो मानो घर में रहते हुए वैरागी थी। वे बिल्कुल सारी क्रियाये साध्वियों की करती थी और सदा ही उस घड़ी की बाट देखा करती थी कि कब वह दिन आये कि वह संसार छोड़ कर साध्वी बने।

उसमे माता ने आपके बारे मे सब कुछ निश्चय कर लिया। साथ ही इस चर्चा को सुन कर इन दोनो बहन भाई ने भी वहीं उसी समय एक दूसरे के सामने जैन दीक्षा लेकर आजन्म ब्रह्मचारी रहने का निश्चय कर लिया, और चर्चा समाप्त होते ही माता के निकट पहुंच कर एकान्त पाकर अपना निश्चय उसके सामने प्रगट कर दिया। धर्म परायण माता को इनका यह निश्चय सुन कर हर्ष हुआ किन्तु उसने उनके सामने इस मार्ग की सारी कठिनाइयां एक एक कर समझाईं। आपने कहा—

साधू कहावन कठिन है लंबा पेड खजूर।
चढे तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकना चूर॥

गरज यह कि हर तरह आपको समझाया, मगर उस वक्त इन दोनो के आत्मा रूपी घडो पर धर्म रूपी तेल इस प्रकार चिपट चुका था कि उस पर कितना भी सांसारिक मोह रूपी पानी पड़े किन्तु उन चिकने घडो पर इसका कुछ भी असर न हो सका। माता बहुत परेशान थी कि क्या करे अन्त मे वह इन दोनो वीर बालको को लेकर उस समय ब्यावर मे स्थित पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज साहिब के दर्शनो को आई और उनसे अपनी सारी कथा कह सुनाई। इतने ही मे व्याख्यान का समय हुआ और मुनि श्री ने उपस्थित विषय पर ही अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया उसमे अनेक प्रकार साधु मार्ग के कष्टों से डरा कर इन्हे समझाया और उसी समय इनको अपने सामने बुलाया कि ये इस बात से मना करें कि साधुवृत्ति नहीं धारेंगे। नगर के सभी धनी मानी सज्जन उस समय उपस्थित थे। हमारे चरित्र नायक वहां गये और बजाय ना करने के वहां इन्होंने अपना सारा साहस खींच

समय उपस्थित हुये । किन्तु जो होनहार होता है उसे कोई टाल नहीं सकता। ये फिर अपनी माता व बहिन के साथ पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज के पास पाली पधारे।

## दीक्षा

आपकी इस प्रकार हठग्राहिता और धर्म प्रेम देख कर सर्व म्मति से यही निश्चय हुआ कि इनकी भोजाई को सब जायदाद आदि की वसियत देकर इन तीनो प्राणियों को जैन धर्म की दीक्षा ी जाए।

योजनानुसार फाल्गुन कृष्णा १३ संवत १९६७ को इन्हें दीक्षा ने का दिन तय हो गया। आस पास के हजारो नर नारी आ २ र उपस्थित होने लगे और बड़ी धूमधाम से हमारे चरित्र नायक उस समय करीब २ पन्द्रह हजार जनता के सामने यह भगवती ीक्षा धारण की जिसे दृढ़तापूर्वक निभाते हुये आज हमारे ामने देदीप्यमान है और फाल्गुन शुक्ला पचमी को जावद शहर आपकी माता व बहिन ने भी दीक्षा धारण की जिसका वृतान्त ग फिर कभी पाठकों के सामने उपस्थित कर सकेंगे ऐसी आशा । पाठक! यह इनके अखण्ड ब्रह्मचर्य का ही प्रभाव है कि नमें एक अपूर्व तेज और आकर्षण शक्ति झलकती हुई दिखाई ती है जिसके सामने हजारों राजाओ, बडे २ अधिकारियों, धनी ानी सेठों और जैनियों व जैनेतर मनुष्यों के भी स्वयं ही मस्तक ुक जाते हैं।

आपका चरित्र अनेक घटनाओ से परिपूर्ण है किन्तु इस स्तक में हम उन सबका वर्णन करके हम इसे बडी पुस्तक नहीं नाना चाहते। हमे अब इस पुस्तक मे अपने यहां अजमेर का

**Shriyut Lakshman Singhji Kothari,**
**V A (Hons.) M. R. A. S.**
**Advocate.**
**Inspector E. I. Ry.**

श्रीयुत लक्ष्मणसिंहजी कोठारी, प्रतिष्ठित स्नातक
वेदालङ्कार, एम० आर० ए० एस०
एडवोकेट, अजमेर

**Shriyut Lakshman Singhji Kothari,**
**V. A ( Hons ) M. R A. S.**
**Advocate.**
**Inspector E. I. Ry.**

श्रीयुत लक्ष्मणसिंहजी कोठारी, प्रतिष्ठित स्नातक
वेदालङ्कार, एम० आर० ए० एस०
एडवोकेट, अजमेर

अत' आपने वहा से अपने शिष्य श्री१००६ श्री विजयचन्द्रजी महाराज के साथ कोशीथल से विहार किया और अपनी प्रिय वाणी द्वारा अनेक ग्रामो और नगरो की धार्मिक व श्रद्धालु जनता को धर्मामृत पान कराते हुए विचरने लगे। जब से आपका कोशी थल से विहार हुवा उसी समय से यहां अजमेर वालो की भावना थी कि आप इस ओर विहार करे। जिस प्रकार चुम्बक पृथ्वी पर रखा हुआ भी गाय के पेट से सूई को खीच लेता है उसी प्रकार हम लोगो की प्रेम भावना ने एक ऐसा आकर्षण का कार्य किया कि आपका विहार स्वत ही इधर की तरफ होने लगा। और विजयनगर आदि मार्ग के अनेक स्थानो मे विहार करते हुए आप अजमेर मे पधारे। किन्तु अजमेर मे पधारने से पहले आप नगर के बाहर की बस्ती आर्यनगर मे खण्डेलवालो की धर्मशाला मे विराजे। लोकोक्ति है कि—"स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते" इसी प्रकार आपके प्रभाव से वहा के जितने भी पल्लीवालो के घर है वो सब सेवा मे आकर उपस्थित होगये और महाराज की सेवा का लाभ लेने लगे। जिनमे कुछ नाम विशेष उल्लेखनीय है सो हम पाठको के परिचय के लिये देते है.—

लाला दीपचन्दजी जैन, रईस सुपुत्र ऋषभचन्दजी B A. L-L B एडवोकेट, स्व० कोठारी जालमसिहजी साहब की धर्म पत्नी व आपके सुपुत्र और आपके दामाद अभयमलजी सॉड आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सरदार कुमारी, मोतीसिहजी कोठारी व आपके सुपुत्र लक्ष्मणसिहजी इन्सपेक्टर ई० आई० आर० लाला टीकमचन्दजी, लाला नारायणदासजी, सुप्रसिद्ध "चन्द्रा स्टोर" के प्रोप्राइटर मास्टर कन्हैयालालजी व आपके सुपुत्र विश्नुचन्द्रजी, प्रकाशचन्द्रजी, केशरगंज वाले बाबू रामजीलालजी जैन म्युनी-

सिपल वेक्सीनेटर, बाबू मोतीलालजी, मैनेजर सस्ता साहित्य प्रेस ब्रह्मपुरी, बाबू किशनलालजी जैन बडेरिया।

यहां महाराज का विचार कुल १, २ दिन ठहरने का था किन्तु उक्त सज्जनो के धर्म प्रेम के कारण आपको वहां एक महीना ठहरना पड़ा।

## श्रीमान् एस. खुर्शीद एस्क्वायर चीफ कमिश्नर साहब बहादुर अजमेर-मेरवाड़ा का निमन्त्रण

यहां के चीफ कमिश्नर साहब ने जैसा प्रजा प्रेम प्राप्त किया है और सर्व प्रियता आपको मिली है वह अकथनीय है। आपके विषय मे कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। आपका प्यारा नाम इस नगर के बच्चे बच्चे के मुंह पर इस प्रकार है जैसे ये कोई उनके बिलकुल सगे सम्बन्धी ही हो। इनके विषय में यहाँ के एक प्रसिद्ध कवि श्री विमलप्रकाश जैन ने बड़ी सुन्दर कविता उस समय रची थी जब ये चीफ न होकर केवल कमिश्नर ही थे। वह हमने प्रयत्न करके प्राप्त की है सो पाठकों के मनोरंजनार्थ हम यहाँ देते हैं। पाठक देखेंगे कि कवि ने किस प्रकार इनके वर्णन का चित्र खींचा है।

## जनाब सैयद खुरशीद साहब कमिश्नर बहादुर अजमेर-मेरवाड़ा की ख़िदमत में—

खुदा ने खुश नसीबी दी इन्हे खुरशीद साहब को,
के खुरशीद वक़्त्र से भी है रोनक़ उनकी बढ चढ़कर।
जहूर इनका हुवा जिस जा–उजाला हो गया ऐसा,
नहीं ढूँढ़े से मिलता है भग गया अन्धेरा यो डर कर।
किया है आपने मजदूरे दिल के दिल मे घर ऐसा,
दुआ करते रहेंगे आक़बत मे भी तेरी मर कर।
कोई कहते हैं तुम अवतार हो उस शाह अकब्बर के,
सदा तवारीख मे शोहरत है जिसके राज की बदक़र।
हरएक दिल की सदा है यह कमिश्नर हो तो ऐसा हो,
जिसे इन्साफ प्यारा है के अपनी जान से बढ कर।
वो ऊँचे खान्दान सर सैयद अहमद खां को तुमने,
किया रोशन भलाई से सदा रय्यत के मन चढ़ कर।
बड़ी खुश किस्मती जो आपके दीदार हम पाएँ,
खुदा ने अपने हाथो से उतारा है तुम्हे घढ़ कर।
सदा फूलो फलो चढ़ते हुए सीढ़ी तरक्की की,
विमल शोहरत तुम्हे हासिल हो इससे सोगुनी बढ़कर।

---

जिस समय आपको महाराज के विषय मे समाचार मिला आपने तुरन्त ही महाराज से मिलने और उनका उपदेश सुनने की इच्छा प्रगट की और बडे भाव पूर्वक शब्दो में महाराज को निमन्त्रित किया और बड़ी शाति और दिलचस्पी के साथ महाराज का उपदेश आनासागर तट पर की कोठी पर सुना और जैन धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त की बल्कि आपको इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ आपने ता० १६-२-४३ को उपदेश सुनकर ता० ५-३-४३ को महाराजजी को फिर आमन्त्रित किया और तरह २ के प्रश्नो द्वारा करीब २ घटे तक महाराज श्री से धर्म चर्चा कर जैन धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त किया और अपना चिह्न स्वरूप एक मान-पत्र ( देखो पृ० १३ पर ) देते हुए आपने कहा कि आपके दिल मे बहुतसी बातो की शंकाएँ थी और उनके निवारणार्थ आप किसी समय पूज्य महात्मा गांधीजी से भी मिले थे किन्तु महाराजश्री से मिलकर जिस प्रकार आपकी शकाओ का निवारण और जैनधर्म का ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे आप बहुत खुश हैं।

इस तरह हमें महाराज श्री के वृहत् ज्ञान और अपूर्व विद्वता का आभास मिलता है। आपका यह कार्य वास्तव मे स्तुत्य और प्रशसनीय है। जैन समाज को आज ऐसे ही साधुओ की आवश्यक्ता है जो बिना किसी भेद भाव के प्रत्येक व्यक्तियो से मिल कर जैन धर्म और उसके सिद्धान्त पर दूसरो की श्रद्धा जमावें।

---

चीफ कमिश्नर साहिब वहादुर, अजमेर-मेरवाड़ा

Ali Janab Sahabjada Khurshid Ahmed Khan Sahib Bahadur, I. C. S., Chief Commissioner Ajmer-Merwara

जैनधर्म भूषण मुनि श्री के परम भक्त—
आली जनाब साहिबजादा खुरशीद अहमद खाँ, आई० सी० एस०, साहब वहादुर चीफ कमिश्नर अजमेर-मेरवाड़ा, अजमेर

**True Copy.**

CHIEF COMMISSIONER'S OFFICE,
AJMER.
*March 9, 1913*
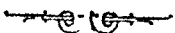
Jain Dharam Bhushan Manohar Lalji Maharaj a Jain Sadhu has met me twice recently. He is a learned man and I was greatly interested to hear his exposition of some of the abstruse tenets of the Jain religion. Quite unlike ascetics of other faiths that I have met, he holds refreshingly liberal views. I hope he will again visit Ajmer and see me.

Sd / S. KHURSHID
*Chief Commissioner*
*Ajmer-Merwara.*

## Congratulation.

Jain Community pay his heartiest thanks to the honourable, Sahibzada Khurshid Ahmed Khan Sahib Bahadur I C. S Chief Commissioner, Ajmer-Merwara, Ajmer, for his great efforts of furtherance the cause of non-injury and Justice in the town during the stay of His Holiness Muniraj Shri Manoharlalji, the great Jain Dharamguru.

*Jain Swetambar*
*Sthanakvasi Community, Ajmer.*

## श्रीमद्दयानन्द आश्रम गांधी चौक अजमेर में जैन धर्म पर महाराज श्री का सारगर्भित भाषण

अजमेर आर्य समाजियो का एक केन्द्र स्थान माना जाता है और कितने ही व्यक्तियो की ऐसी मान्यता है कि आर्यसमाजी बहुधा जैन धर्म के विरोधी होते है। किन्तु इनमे भी बहुत से ऐसे गम्भीर पुरुष देखने मे आते है जो किसी प्रकार का किसी मे धार्मिक द्वेष न रख कर हर एक के धर्म का आदर करते और उनके तत्वो को जानने का प्रयत्न किया करते है।

इसकी हमारे पास सब से बड़ी मिसाल हैद्राबाद नीजाम सत्याग्रह के विजयीवीर श्रीमान देशभक्त भारत केशरी आदि अनेक उपाधि धारक श्री कुँवर सा० चांदकरणजी शारदा B A. L.L. B एडवोकेट की है। आप कट्टर आर्यसमाजी और आर्य समाज की अनेक सस्थाओ के सञ्चालक हैं किन्तु फिर भी आपको दूसरे धर्मों से द्वेष भाव लेश मात्र भी नहीं है। सिरोही रियासत आबू मन्दिर टैक्स विरोधक जब जैन समाज की ओर से आन्दोलन चला था तो आपने उसमे बिना किसी भेदभाव के खूब दिलचस्पी के साथ कार्य किया और अब जब आपने महाराज की कीर्ति सुनी तो महाराज श्री को उक्त स्थान पर आर्य समाज के अनेक धुरन्धर विद्वानो के समक्ष भाषण देने को आमन्त्रित किया और बड़े प्रेम से सारी उपस्थित मण्डली ने उसे सुना प्रथम जैन धर्म भूषण मुनि श्री ने "जैन धर्म" के विषय पर मार्मिक भाषण दिया। बाद मे विजय मुनि ने हिन्दू धर्म के पतन की कहानी गायन रूप मे सुनाई इस पर श्री शारदाजी ने एक मानपत्र महाराज श्री को भेंट किया जिसे पाठक पृ० सं० १६ पर देखें।

कुँवर चाँदकरण शारदा

ॐ

यतोधर्मस्ततोजय
KUNWAR CHANDKARAN SARDA

शारदा-भवन अजमेर,
Sarda Bhawan, AJM

सेवा मे !

जैनधर्म भूषण पंडित मुनि श्री मनोहरलालजी महाराज

श्रीमान, सादर नमस्ते !

आपने कृपा कर दो व्याख्यान नगर आर्य समाज अज में दिये उनको सुन कर चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ, वास्तव आपकी विश्वप्रेम की भावना और प्राणी मात्र पर दया श्लाघ है, यदि जैन मुनि आपके समान उदार विचारों के हो जावे हिन्दू समाज जो अवनति के गहरे गड्ढे में और अविद्यान्ध में गर्क है उसका शीघ्र उद्धार हो जावे, आप जैसे विद्वान "स शिव सुन्दरम्" के उपदेश करने वाले जैन मुनियों की हिन्दू सम को अत्यन्त आवश्यक्ता है, परमपिता परमात्मा से हमारी प्रार्थ है कि आपके उच्चभाव सारे ससार मे कल्याणमार्ग को फैलाने समर्थ हो और हिन्दू समाज पुनः अपने प्राचीन तेजोमय गौ को प्राप्त हो।

भवदीय.
चांदकरण शारदा,
प्रधान
राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा
तथा मन्त्री
श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्था
व मालवा

ता० ७-३-४३
फाल्गुण शुक्ला १
संवत् १९९९ वि०

वीरम् *

# सचित्र
# आदर्श उपकार दिग्दर्शन

व

## ( अजमेर-मेरवाड़े में धर्म-प्रचार )

लेखक व संग्रहकर्ता

**कविरत्न पं० जगन्नाथ उपाध्याय, अजमेर**

प्रकाशक

रतनचन्द चोपडा, मिश्रीलाल ढाबरिया
भँवरलाल नाहर, रंगरूपमल श्रीश्रीमाल

| दिसम्बर | मूल्य | वीर सं० २४७० |
| --- | --- | --- |
| सन् १९४३ ई० | सदुपयोग | विक्रम सं० २००० |

सस्ता-साहित्य प्रेस ब्रह्मपुरी अजमेर में छपी ।

भारत-केशरी देश-भक्त कुँवर चाँदकरणजी शारदा, बी० ए०
एल-एल० बी०, एडवोकेट अजमेर

Kunwar Mangilalji Ranka, Nasirabad (Cantt.)

धर्म प्रेमी उत्साही नवयुवक कुँवर माँगीलालजी रांका,
नसीराबाद (छावनी)

कुँवर चाँदकरण शारदा

ॐ

यतोधर्मस्ततोजय.

KUNWAR CHANDKARAN SARDA

शारदा-भवन अजमेर,

Sarda Bhawan, AJMER.

मार्गशीर्ष बद १ संवत् २००० वि०

# सर्व साधारण से अपील

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि जैन धर्म भूषण श्रीमान मनोहरलालजी महाराज बडे ही योग्य अनुभवी अहिसा प्रचारक जैन मुनि हैं। इनके व्याख्यान वर्तमान परिस्थिति को लिये हुए बहुत ही हृदयग्राही और लाभप्रद होते हैं। जहां २ आप पधारें वहां के आर्य समाजी तथा हिन्दू भाइयों से मेरी प्रार्थना है कि वे आपके व्याख्यान कराकर अवश्य लाभ उठावें।

भवदीय

चाँदकरण शारदा

प्रधान

राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा

अजमेर

## उदयपुर से पूज्य श्री का सन्देश

पाठको को पढ़कर हर्ष होगा कि आप इतनी ऊँची पदवी धारण करते हुए भी अपने पूज्यवर का और उनकी आज्ञा का कितना मान करते हैं। जिस समय आप यहाँ विराजे हुए थे कि पूज्य श्री १००८ श्री घासीलालजी महाराज का उदयपुर से आपके लिये सन्देश आया और आपने उसे शिरोधार्य करके उस ओर गमन का निश्चय किया। श्री सघ अजमेर को जब आपके इस निश्चय का पता लगा तो उसने इन्हें रोकने का प्रयत्न किया लेकिन मसल मशहूर है.—

'आई मौज फकीर की दिया झोंपड़ा फूंक'

इन लोगो के ऊपर भला किसका प्रयत्न चल सकता है ? श्री संघ ने आपसे इस वर्ष के चातुर्मास के लिए काफी आग्रह किया किन्तु इस बात का उत्तर देना आपके लिये इस वक्त असम्भव था क्योंकि आपके लिये अजमेर छोड़कर जाने का सन्देश था और वह भी पूज्यवर का। न जाने पूज्यवर ने किस कारणवश यह आज्ञा प्रदान की है ? इन बातों को ध्यान में रखते हुए आपने इस लोगों को किसी प्रकार का सन्तोषजनक उत्तर न देकर इसके निश्चय का भार पूज्यवर पर ही डाल दिया। और यहाँ से विहार कर शहर के बाहर कानमलजी लोढा के "चन्दन निवास" में विराजना रहा। यहां से विहार कर उदयपुर की ओर चल पड़े। अनेक ग्रामों व नगरों में धर्मोपदेश देते ये भक्त वत्सल मुनिराज चैत्र शुक्ला चतुर्दशी ता० ११-४-४३ को उदयपुर में प्रविष्ट हुए।

पूज्य श्री घासीलालजी महाराज उस समय वहां के भूतपूर्व दीवान साहब तेजसिंहजी के आग्रह से उदयपुर के बाहर बहुत ही

रेवेन्यु मिनिस्टर-मेवाड स्टेट—

Dootor Mohansinghji Mehta, M. A. LL. B Ph. D.
Bar at-Law

श्रीमान् डाक्टर मोहनसिंहजी मेहता, एम० ए० एल-एल० बी० पी एच० डी० बार-एट-लॉ, रेवेन्यु मिनिस्टर, मेवाड स्टेट

Sastı Sahitya Press Ajmer

रमणीक स्थान में स्थित श्रीमान जीवनसिंहजी मेहता के "जीवन निवास" नामक बंगले मे विराजे हुए थे। मुनि श्री उस ओर ही अपने शिष्य को साथ लिये हृदय में पूज्य श्री के प्रति प्रेम उमंगधारे हर्ष पूर्वक चले जा रहे थे कि चर्च के पास वाली रोड़ पर तेज रफ्तार से मोटर दौडाते हुए मेवाड स्टेट के रेवेन्यु मिनिस्टर डा० मोहनसिंहजी महता B A LL B. DLT. Bar-at-Law से साक्षात्कार हुआ। आप तुरन्त अपनी मोटरकार वापिस मोड कर बडी भक्ति भाव से मुनि श्री से मिले और दर्शनों का लाभ लिया।

आप कुछ ही आगे गये होंगे कि उधर से पूज्यवर भी विहार करते हुए पधार गये रास्ते में ही वेदला रोड़ पर आपका सम्मिलन हुवा। यह सम्मिलन कितना हर्ष और उत्साह से परिपूर्ण था ये वही कह सकता है जो मन पर्यव ज्ञानी हो या जिसने वहाँ स्वयं देखा हो। हमारी लेखनी तो केवल सुने हुए के आधार पर ही है।

निदान वहां पर आप श्रीमान चन्द्रसिंहजी रेलवे मैनेजर साहब के आग्रह से उन्हीं के बङ्गले पर ठहरे और स्टेट के सभी उच्च अधिकारी गण समय २ पर आपके पास पधार कर आपके दर्शनों एव व्याख्यानों का लाभ लेते रहे। न जाने आपकी वाणी मे वो कौन सा जादू भरा हुआ है कि आप जहाँ भी जाते है वहीं ऐसा मालूम होने लगता है कि मानो ये धर्मप्रेमी और श्रद्धालु जनों के हृदय सम्राट ही आ गये हो।

श्री महावीर मंडल में विराजे हुए श्री १००८ श्री मांगीलालजी युवाचार्य और मंडल के प्रधान चानणमलजी नलवाया मंत्री श्री ...जी लीलवाया व अन्य सज्जन गण जैसे पूर्ण रुवा भावी

श्री लंकापति शोभालालजी जावरिया पन्नालालजी मारू आदि २ अनेक महानुभावो ने पधार २ कर दर्शनो एवं व्याख्यानो आदि का लाभ लिया। और महावीर मंडल में भी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित जनता के समक्ष मंडल के अधिकारी वर्ग की प्रार्थना पर पधार कर उपदेश दिया। और जनता ने अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मामृत पान किया।

## उँठाला का ताल

मेवाड में उँठाला एक प्रसिद्ध ग्राम है। ग्रीष्म की ऋतु की कड़ी धूप के कारण वहाँ के ताल का जब पानी सूखने लगता है तो छिछले जल मे अनेक मछलियां किनारों पर ही छट पटाने लगती हैं। मांसाहारी मनुष्य इससे लाभ उठाने के लिये कांटे ले ले कर पहुँच जाते और मछलियाँ पकडने लगते हैं क्योंकि जगत में कहावत प्रसिद्ध है कि "अक्सर मनुष्य जाति दूसरे की आपत्ति और दुःख से लाभ उठाने का उपाय सोचा करती है।" किन्तु जो दयाप्रेमी और परोपकारी जीव हैं, जिनका ध्येय ही जीवों की रक्षा पालना है, उनसे यह दृश्य नहीं देखा जा सकता। नांथाहेड़ा की ओर से विहार करते हुवे वीर पुत्र मुनिश्री सुमेरमलजी महाराज ठा० २ से पधारे। मुनिश्री के हृदय में उन दीन निराश्रय जीवों के प्रति करुणा भाव उत्पन्न हुए और समाज के आगे उन्हें प्रगट किया। आपके मुखार बिन्द से निकलने की देर थी कि तुरन्त ही वहाँ पर चन्दा होकर तालाब में लम्बा चौडा गहरा कुंड खुदवा दिया गया जिससे वहाँ पर ताल के सूख जाने पर भी जल रह सके और असंख्यात त्रस जीवों का घात होने से बचे। धन्य है ऐसे साधु इनके भाव और इस शुभ कार्य

के सहयोगियों को जिन्होंने यह महान दया का कार्य करके असंख्यात जीवों के वध को बन्द किया, वहाँ से विहार कर पूज्य श्री की सेवा में उदयपुर पधारे। साथ ही जैनधर्म भूषण मुनिश्री के दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की।

## अजमेर चातुर्मास विनती स्वीकार

कर्म संसार में किसी को भी अपना फल दिये बगैर नहीं छोड़ते। असाता वेदनी के उदय से महाराज श्री को शारीरिक व्याधि ने आ घेरा। यह देख पूज्यवर की आज्ञानुसार व मेहताजी के विशेष आग्रह से उसकी शांति व परिचर्या के लिये नगर में जाकर "अक्षय आश्रम" में निवास किया और प्रसिद्ध राजवैद्य रविशंकरजी का इलाज शुरु हुआ जिसे कम्पाउण्डर साहब 'जमुनालालजी' ने बड़ी ही दिलचस्पी के साथ इलाज कर स्वस्थ किया जिसके लिये वैद्यराजजी व कम्पाउडर साहब को सादर धन्यवाद है।

उधर पूज्य गुरुवर निकट के गांवों में धर्म प्रचारार्थ भ्रमण के लिये पधार गये थे और इधर आपकी परिचर्या हो रही थी। ज्योंही आपके साता वेदनी का उदय आया, रोग दूर होने लगा, तब मुनिश्री पूज्यवर के निकट ही जो अभी भ्रमण को आस पास ग्रामों में पधारे थे वापिस पधार गये और मेहताजी साहब के "जीवन निवास" ही में विराजे, वहाँ पर सेवा में पधारे।

इतने ही में अजमेर श्री संघ का निमंत्रण पत्र लेकर श्रीमान् सेठ साहब प्यारेलालजी व श्रीमान सेठ साहब नोरतमलजी रीया-

वाले अपने सुपुत्रो आदि सहित पधारे और पत्र भेट करते हुए पूज्यवर से मुनिश्री का अजमेर मे चातुर्मास की आज्ञा प्रदान करने की विनती की और कहा कि अजमेर श्री संघ ने आपके गौरव प्रतिष्ठा, वाक्चातुर्यता, ज्ञानपटुता आदि गुणों पर रीझ कर और यह देख कर कि चीफ कमिश्नर आदि राजपुरुषो और श्रीकुँवर सा० चाँदकरणजी शारदा आदि जैनेतर महापुरुषो पर आपका अच्छा प्रभाव पड़ा है जिससे हमे भविष्य मे भी आपसे अनेक प्रकार की शुभ आशाएँ हैं। आदि बातो को ध्यान मे रखते हुए ही यह विनती पत्र आपकी सेवा मे भेट किया गया है।

पूज्यवर ने हमारे ऊपर कृपा करते हुए द्रव्य क्षेत्र काल भाव को ध्यान मे रखते हुए मुनिश्री को आज्ञा प्रदान की और पूज्यवर श्री ने जसवन्तगढ की विनति स्वीकार कर वहाँ पधार कर चातुर्मास करने का निश्चय किया।

## उदयपुर से अजमेर

हमारा निमन्त्रण तो स्वीकृत होगया पर वहां से पधार कर अजमेर तक आना आपके लिये उस माल गाड़ी के समान था जो फुलेरा से चल कर अजमेर आते आते रास्ते में दो दो तीन-तीन दिन पूरे कर देती है। हम लोगो ने जब देखा कि निमन्त्रण के कई दिन बाद तक भी महाराज उदयपुर से नहीं चले तो हमने फिर पत्र दिया। और अबकी बार आपने चलने मे शीघ्रता भी की किन्तु इसी समय श्रीमान् मनोहरसिंह गणेश [illegible]लालजी मेहता मन्त्री श्री जैन मनोहर पुस्तकालय उदयपुर (उ[illegible] [illegible]हुन अर्से मे महाराज द्वारा स्थापित होकर सुचारु रूप से काय[illegible]

कर रहा है और जिसमे सर्व विषयों की पुस्तकें पूज्यवर द्वारा रचित व अन्य भी यहाँ विक्रय के लिये रहती हैं ) ने आकर महाराज श्री से उसके निरीक्षण के लिये प्रार्थना की। आपने उसका भली भांति निरीक्षण किया और कार्य सन्तोषजनक पाया। इसके बाद महाराज श्री ने विहार किया किन्तु चलने के पहले आपको सूरज पोल दर्वाजे के बाहिर फतह मैमोरियल के सामने श्रीमान् नारायणजी भगवानजी फोटोग्राफर के भक्ति भाव और प्रेम पूर्ण आग्रह के कारण ४ दिन तक उनके बगले मे ठहरना पड़ा।

## सनवाड़ में पदार्पण

अन्त मे आप वहां से चल दिये और मार्ग मे दाह का खेड़ा, गुडली, नाहर मंगरा, मोहोली आदि ग्रामो मे धर्मामृत बरसाते सनवाड़ आकर पहुँचे और श्रीमान् सेठ साहब ताराचन्दजी की दुकान के ऊपर चौबारे मे विराजे।

सनवाड एक अच्छी बड़ी बस्ती है जिसमे अनेक श्रावक रहते और मुनियों से बडा प्रेम रखते हैं। यहा के महाराज श्रीमान् ...र्धनसिंहजी भी बड़े धर्म प्रेमी और दयालु राजा हैं। यहा पहले ही मेवाड के पूज्य श्री १००८ श्री मोतीलालजी महाराज के ...शिष्य जोशीले व्याख्यानी श्री १००७ श्री भारमलजी महाराज ठाणा २ से तथा वृद्धा महासती श्री शृङ्गार कुँवरजी का विराजना था और पंजाब केशरी पूज्य श्री १००८ श्री काशीरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री १००७ श्री ताराचन्दजी महाराज ठाणा २ से पधार गये। आपको भी वहां योग्य स्थान पर ठहरा दिया गया।

दोपहर के समय पं० मुनि श्री भारमलजी व महासती श्री शृङ्गार कुंवरजी, मुनि श्री के निकट आये। धर्म चर्चा छिड़ रही थी कि श्रीमान गोर्धनसिंहजी महाराज भी दर्शनार्थ उपस्थित हुए और हर्ष पूर्वक मुनि श्री का व्याख्यान सुना और अगले दिन सम्पूर्ण ग्राम में अगता पलवाने का प्रबन्ध कराने की प्रतिज्ञा ली और बाद में वैसा ही किया जिससे अनेक जीवों की प्राण रक्षा हुई। एतदर्थ मुनिश्री व महाराज गोर्धनसिंहजी को हम धन्यवाद देते हैं।

इसके पश्चात स्थानीय श्री संघ ने इस प्रकार पधारे हुए साधु-गण का एक साथ व्याख्यान कराने का विचार किया और इसके लिये साधूगण से विनय की जिसको सबने हर्षपूर्वक स्वीकार किया किन्तु पंजाब केशरीजी के शिष्य महोदय ने श्रीसंघ के अनेक प्रकार समझाने बुझाने पर भी इस आयोजन में सम्मिलित नहीं हुए।

अन्त में पूर्व निश्चयानुसार विजय जैन पाठशाला मे पधार कर और एक ही पाट पर बैठकर इन दोनों मुनिराजों का सार-गर्भित व्याख्यान हुआ। जनता काफी संख्या में उपस्थित थी और उसमें से अनेकों ने अपने भाव शुद्ध करके अनेक प्रकार के नियमादि लिये। स्थानीय कामदार श्री भूरालालजी सिसोदिया (धॉयला निवासी) पेशकार मा० ख्यालीलालजी बाफणा, भेरु-दासजी केशरीमलजी चपडोत, श्रीमान् सेठ ताराचन्दजी भंवर-लालजी बाफणा आदि सज्जन बड़े उत्साही और धर्म प्रेमी हैं। आपने बहुत प्रार्थना की कि महाराज श्री कुछ दिन और वहीं विराजे किन्तु ग्रीष्म ऋतु की कठोरता और वर्षा की निकटता के कारण महाराज श्री वहां से अनेक गांवों को पार करते हुए मुल तानपुरा पधारे।

## सुलतानपुरा

यहाँ आपका स्वागत यहाँ के जागीरदार साहब (माफीदारजी) ब्रह्मचारी सरस्वतीदासजी व कामदार साहब हगामीलालजी चौधरी ( हुरड़ा वाले ) ने बड़ी भक्ति भाव और प्रेम पूर्वक किया। ब्रह्मचारीजी संस्कृत के अच्छे विद्वान व सन्तों के पूर्ण भक्त हैं। यहां से चलकर आप धनोप में ठहरे।

## धनोप

यहाँ के श्री संघ ने बड़े प्रेम भाव से आपका व्याख्यान सुना और आपके सतोपदेश से स्वर्गस्थ आदर्श विदुषी सती श्री मोहन कुँवरजी महाराज के स्मृति रूप में जैन पुस्तकालय की स्थापना हुई। और यहाँ पर फेरोट दरबार के कुंवर साहब ने दर्शनों का लाभ लिया।

## नानसी

धनोप से चल कर आप नानसी पधारे। यहाँ के ठा० साहब कर्णसिहजी ने बड़े प्रेम से आपका व्याख्यान सुना और ओनाड़-मलजी, विजयसिहजी, चन्दनमलजी, मोखमसिहजी, कुन्दनमलजी, फोजमलजी, नन्दलालजी, अमरसिंहजी, उगरसिंहजी, सुगनचन्द्रजी आदि ने महाराज श्री की सेवा का लाभ लिया। ये लोग बड़े ही सज्जन और धर्म प्रेमी हैं। यहाँ से चलकर चाँपानेरी आदि गांवो में होते हुए आप टांटोटी पधारे।

# मेरवाड़े में अहिंसा धर्म का प्रचार

## टांटोटी

यह अजमेर मेरवाड़ा का एक प्रसिद्ध कस्बा है जहाँ के ताजीमी इस्तमरारदार श्रीमान् जीवनसिंहजी बड़े ही उच्च विचारों के शिक्षित व ऊँचे खान्दान के दीपक स्वरूप बहुत ही योग्य दयालु, धर्म प्रेमी व न्यायवान शासक हैं। आपने अपने शासन काल में पाठशालाये खुलवाकर पोस्ट आफिस आदि कायम कर दूसरो के लिये आदर्श उपस्थित किया है। यद्यपि आप "मेयोकॉलेज" अजमेर के विद्यार्थी रह चुके है किन्तु फिर भी आपकी सादगी और भोलापन प्रशंसनीय है। आपको पहले कभी किसी जैन साधु की संगत का सौभाग्य प्राप्त होने का अवसर नहीं आया था। मुनिश्री के आगमन का समाचार सुन कर आपने मुनिश्री का अपने महलों मे व्याख्यान कराया। अत्यन्त भक्ति भाव व प्रेम पूर्वक सुनकर व प्रभावित होकर मुनि श्री को जीवदया का पट्टा लिख कर भेंट किया और उसमे वर्णित आज्ञाओं की घोषणा पब्लिक मे करा दी गई। इसके पश्चात महा-राज श्री का विचार सायकाल के समय वहा से पधारने का था कि इतने मे ही राव साहब के कामदार श्रीदेवालालजी आबादी के बाहर वाली कोठी में पधार कर व्याख्यान देने के लिये निम-न्त्रण लेकर आये और महाराज श्री का राव साहब ने बड़े प्रेम पूर्वक व्याख्यान लगभग एक घटे तक सुना और रात्रि को वहीं निवास करने की प्रार्थना की। इस दूसरे व्याख्यान के फल स्वरूप अगले दिन सरकारी हुक्म से जीव हिंसा के सभी कार्य बंद रहे और बाजार आदि भी बन्द रहा। और ॐ शान्ति की

ार्थना कराई गई जिससे बड़ी भारी धर्म प्रभावना हुई और अनेक जीवों की प्राण रक्षा हुई। इसके लिये हम राव साहब का जितना भी आभार मानें वह थोड़ा है। आपने यह कार्य करके अन्य राजाओं के सामने एक आदर्श उपस्थित किया है। श्री जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है कि आप दिन दूने रात चौगुने फूलें फलें और आपकी सारी मनोकामनायें सिद्ध हों

श्री संघ के कुछ उत्साही सज्जन सेठ साहब शोभागमलजी मालिक फर्म छोटूलाल अजीतसिंह कामदार साहब देवालालजी आदि के आग्रह से महाराजश्री ने एक सार्वजनिक सभा में भी व्याख्यान दिया जिसका जैन व जैनेतर जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। और महाराज श्री से और अधिक ठहरने की प्रार्थना की गई किन्तु आप वहाँ से विहार कर नसीराबाद पधार गये।

## नसीराबाद में आदर्श उपकार

नसीराबाद पधारने पर आपकी भेंट श्रीमान कैप्टिन एम० एल० आनन्द (ऐग्जिक्यूटिव ऑफीसर) से हुई और आपने बड़े प्रेम और भक्ति भाव से एक घंटे तक महाराज श्री का धर्मोपदेश सुना और प्रार्थना की कि अगले दिन आप मेरी वृद्ध मातेश्वरी व धर्म पत्नी आदि को भी अपना धर्मोपदेश देकर कृतार्थ करें। धार्मिक कार्यों में पीछे रहना आपने नहीं सीखा। अगले दिन आठ बजे आप श्रीमान् के बंगले पधारे और ज्योंही आपके पहुँचने का समाचार अपने क्लर्क श्रीमान् मागीलालजी राका के द्वारा आपको विदित हुआ कि तुरन्त बाहर स्वागतार्थ पधार कर बड़ी भक्ति भाव से अन्दर ले जाकर उच्च

योग्य स्थान प्रदान कर (जिसका पहले से प्रबन्ध किया हुआ था) सब घर वालों ने चारो ओर से घेर कर महाराज श्री का उपदेश सुनना प्रारम्भ किया। मुनि श्री ने उपदेश के सिलसिले में अपनी यह भावना प्रकट की कि यदि अगर होसके तो एक दिन के वास्ते सब शहरवासी अहिंसा व्रत पालन करें। वर्तमान नर संहारक युद्ध की समाप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। इस सिलसले में महाराजश्री ने निम्न कविता सुनाई:—

यूरोप में कल के हलों से काम होता है सही।
जुत क्यों न जाती है अरब में ऊँट के हल से मही॥
गौ वंश पर ही किन्तु है यह देश अवलम्बित सदा।
पर दीन भारत ? हाय ? तेरे भाग्य में है क्या बदा ?
था भी समय वह एक जो अब स्वप्न जा सकता कहा ?
घी तीस सेर विशुद्ध रुपये में हमें मिलता रहा॥
देहात में भी सेर भर से अब अधिक मिलता नहीं।
दुर्बल हुए हम आज यों तनु भार भी झिलता नहीं॥
हा ! दूध पीकर भी हमारा तुष्ट होते हो नहीं।
दधि घृत तथा तक्रादि से भी पुष्ट होते हो नहीं॥
तुम खून पीना चाहते हो तो यथेष्ट वही सही।
नर योनि हो तुम धन्य हो तुम जा करो थोड़ा वही॥
क्या वश हमारा है भला हम दीन हैं बल हीन हैं।
मारो कि पालो कुछ करो तुम हम सदैव अधीन हैं॥
प्रभु के यहां से भी कदाचित् आज हम असहाय हैं।
इससे अधिक अब क्या कहें हा ? हम तुम्हारी गाय हैं॥

बच्चे हमारे भूख मे रहते समस्त अधीर हैं।
करके न उनका सोच कुछ देती तुम्हें दृग नीर हैं॥
चर कर विपिन में घास फिर आती तुम्हारे पास हैं।
होकर बड़े वे वत्स भी बनते तुम्हारे दास हैं॥
जारी रहा क्रम यदि यहां योंही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य्य भारत भाग्य के आकाश का॥
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पायगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट मही बन जायगी॥
हा ? शोचनीय किसे नहीं गौ-वंश का यह ह्रास है ?
इस पाप से ही बढ़ रहा क्या अब हमारा त्रास है ?
घृत और दुग्धा भाव से दुर्बल हुए हम रो रहे।
होकर अशक्त अकाल में ही काल-कवलित हो रहे॥

आपका व्याख्यान इतना रोचक और मनमोहक था कि बड़े तो क्या साहब के छोटे २ बच्चो ने भी उठकर जाने का नाम नहीं लिया। केप्टिन M L. आनन्द, एक्जिक्यूटिव आफिसर साहब व आपकी धर्मपत्नी सोभाग्यवती श्रीमती दयावती देवी, जो कि साक्षात दया की अवतार है, आपकी पुत्रियें राजराणी कुमारी, राज कुमारी, शान्ति कुमारी आदि २ हैं जो गायन विद्या में बड़ी ही निपुण हैं उक्त तीनों कुमारियो ने मिलकर मुनिश्री को भी मधुर स्वर से गायन सुनाया। इसके पश्चात् साहब की प्रार्थना पर आपने उनके वहाँ की भिक्षा ग्रहण की।

## नसीराबाद ( केन्टोन्मेन्ट ) में विश्वशांति की प्रार्थना

मुनि श्री ने साहब से एक दिन सार्वजनिक मीटिङ्ग के आयोजन के लिए फरमाया जिसमें कि सब मिलकर विश्वशांति के लिए प्रार्थना कर सकें व अहिंसा व्रत पालें। साहब ने प्रसन्नता से इसका आयोजन करवाया तथा ता० २-७-४३ को प्रातःकाल इसी सिलसिले में एक सार्वजनिक मीटिंग नसीराबाद शहर के बीच संस्कृत पाठशाला के भवन में हुई।

मीटिंग में हिन्दु, मुसलमान, जैन, ईसाई आदि सब ही जाति के सज्जन उपस्थित हुए। महाराज श्री ने मनुष्य कर्त्तव्य व ईश्वर प्रार्थना पर करीब २-२॥ घन्टे उपदेश दिया प्रस्तुत मीटिंग की इत्तला पब्लिक को डोंडी पिटवा कर समुचित तौर से दे दी गई थी ताकि सर्व सज्जन निश्चित समय पर व निश्चित स्थान पर प्रार्थना के लिए सम्मिलित हो सकें। इस कार्य के लिये महाराज श्री को तो हम क्या धन्यवाद दें क्योंकि आपका तो यह एक कर्तव्य ही है कि जहां पधारते हैं वहीं हर प्रकार का परोपकार का कार्य करते हैं किन्तु साहब बहादुर को हम लोग हृदय से धन्यवाद देते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप चिरजीवी होकर अपने जीवन में उन्नति के शिखर पर चढ़ते हुए खूब फूलें फलें और आपके धर्म रक्षक भाव दिन दिन बढ़ते रहें। आपने

एक्जिक्युटिव आफीसर साहिब नसीराबाद

M. L Anand Sahib, Executive officer,
Nasirabad Cantonment

जैनधर्म भूषण मुनि श्री के परम सेवाभावी
एम० एल० आनन्द साहिब बहादुर, एक्जिक्युटिव
आफीसर, नसीराबाद छावनी

# दो शब्द

जैन साधुओ की प्रतिष्ठा के दो मुख्य कारण त्याग और अहिंसा हैं। इस छोटीसी पुस्तक में जैन धर्मभूषण पंडित मुनि श्री १००८ श्री मनोहरलालजी महाराज के चातुर्मास के वर्णन मे मुनि श्री के त्याग व मनुष्यो मे अहिंसा प्रवृत्ति जगाने के प्रयास का थोडासा दिग्दर्शन कराया गया है। यह मुनिश्री के ही प्रयास का फल है कि मिती भादवा सुदी १४ को अजमेर मेरवाड़े मे कसाईखाने वन्द रहने के लिये म्युनिसिपल वोर्ड में प्रस्ताव पास हुआ जो प्रान्त के जैन इतिहास मे एक चिरस्मरणीय वात रहेगी। इससे पहिले नसीरावाद मे वहां की छावनी के अफसरों को उपदेश देकर वहाँ अहिंसा का पूर्ण रूप से प्रचार किया गया।

मुनि श्री के व्याख्यानो का असर जैनियो व जैनेतर भाइयो पर समान रूप से होता है। आपकी व्याख्यानशैली अत्यन्त सुलभ और चित्ताकर्षक है और यही वजह है कि आपके व्याख्यानो को स्थानीय असिस्टेन्ट कमिश्नर साहव व अन्य अफसरो ने सुनने का लाभ उठाया। आपके जैन तत्वो के समझाने की प्रशसा तो स्वयं चीफ कमिश्नर साहव ने अपने मानपत्र मे जो उन्होंने मुनिश्री को भेंट किया है उसमे भली-भाति की है जिसकी नकल पाठक स्वयं इस पुस्तक मे पढ़ेंगे। इस संघर्ष पूर्ण ससार मे जो यत्र तत्र त्याग

यह कार्य बडे ही महत्व का और चिरस्मरणीय करके जिस प्रकार जैन समाज के ऊपर असीम कृपा दिखाई है उसके लिये हम आपके आभारी हैं (और साहब ने अपनी ओर से एक मान-पत्र भेंट किया जिसको देखो पृष्ठ ३४ पर)

व्याख्यान मे साहब बहादुर व मि० मार्टन साहब ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, पुलिस के सब इन्सपेक्टर आदि २ अनेक प्रतिष्ठित महानुभावो ने पधार कर भाषण सुना। इनके लिये प्रथम ही श्री सघ ने कुर्सियें मुढों का बाकायदा इन्तजाम किया था।

यहां हम प्यारे पाठको की जानकारी के लिये व्याख्यान का कुछ अश उद्धृत करते हैं। ( देखो पृष्ठ ३६ पर )

## True Copy.

Capt. M. L. ANAND, I. A.,
*Executive Officer*

I have had the pleasure and privilege of meeting Jain Dharam Bhushan Shree Maharaj Manohar lalji a Jain Sadhu and was very much interested to know of his exceedingly cultured and liberal views in the domain of religion, not only on Jainism, but on other religions, as practised and found in India.

Learned, ascetic both in his position and personality, Swamiji Maharaj is a very true follower, preacher, and the one who practices both in letter and spirit the precepts of

"AHINSA PARMO DHARMA"

47 MAYO LODGE,
*Nasirabad* ( *Raj.* )
2-7-1943.

Sd. M. L. ANAND
*Captain.*

## Congratulation.

Jain Community pays its heartiest thanks to the Captain M L. Anand I A, Executive officer Nasirabad Cantonment for his great efforts of furtherance the cause of non-injury and justice in the town during the stay of His Holiness Muniraj Shree Manoharlalji, the great Jain Dharamguru.

*Jain Swetambar*
*Sthanakwasi Community Ajmer.*

# मनुष्यता

आत्मा की उन्नति के लिए विवेक की आवश्यकता है। वि
के बिना आत्मा की उन्नति नहीं हो सकती। यह बात कल
मैंने यहां के केप्टन एग्जूक्यूटिव आफीसर साहब को बतलाई
परन्तु शायद ही उस पर आपने फिर मनन किया होगा।
मनुष्य उत्तम विषयों को बार-बार मनन किया करता है उ
आत्मा में अच्छी जागृति हो जाती है। मित्रो! जिस मनु
विवेक नहीं होता, वह पशु से भी खराब है। मैं आपको एक वि
की बात कहता हूँ। उससे आप सहज में समझ जाएँगे कि वि
किसे कहा जाता है?

कल्पना कीजिए आप एक जंगल में खड़े हैं। वहां कई ज
वर अपने से निर्बल पशुओं को चीर फाड़ कर खा रहे हैं। कई
अपने विषैले स्वभाव से दूसरे प्राणियों के शिकार बन रहे
बतलाइए! आप इन प्राणियों के समान हैं या जुदे हैं?

"जुदे हैं!"

मित्रों! इसी को अर्थात वस्तु की विवेचना करने की शक्ति
विवेक कहते हैं। आपने उक्त प्रकृति वाले जानवरों की क्रिया
देखकर विवेचना करली कि"–मैं चीर फाड़ कर मांस खाने वा
सिंह, चीता आदि नहीं हूं। मैं विषमय दंशन करने वाला स
आदि नहीं हूँ।

मैं पशु-जगत से दूसरे जगत का प्राणी—मनुष्य हूँ। इ
प्रकार आपने अपनी भिन्नता बतलाई, पर आपने यह भिन्नता
नाम से बतलाई है या काम से?

जो सूरत-शक्ल से मनुष्य हों पर लक्षणों में—कार्यों में पशु से भी गये-बीते हों, उन्हें क्या कहना चाहिए ? पशुओं से मनुष्य में क्या विशेषता होनी चाहिए, जिससे वह मनुष्य कहलाने का दावा रख सकें ?

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च, सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मोहितेषामधिको विशेषो, धर्मेणहीनः पशुभिः समानः ॥

अर्थात्— आहार करना, नींद लेना, भयभीत होना, मैथुन सेवन करना, यह सब बातें तो मनुष्यों और पशुओं में समान रूप से पाई जाती हैं इनके कारण मनुष्य पशु से भिन्न-विशिष्ट नहीं बन सकता । मनुष्य में धर्म की विशेषता है । जो मनुष्य धर्म हीन है वह पशुओं के ही समान है, क्योंकि उसमें ऐसी बात नहीं पाई जाती जिससे वह पशुओं से भिन्न श्रेणी का साबित होसके ।

कोई यह कह सकता है कि हम पकवान और मिठाइयाँ खाते हैं, इसलिए पशुओं से बड़े हैं । पर यह कहना ठीक नहीं है । मधुमक्खी शहद बनाती है और उसमें इतना अधिक मिठास रहता है कि कोई मिठाई उसकी बराबरी नहीं कर सकती । इसके अतिरिक्त उसमें ताकत देने वाले तथा दूसरे गुण इतने अधिक है कि खाने वाले को आश्चर्य चकित होना पडेगा ।

अगर यह कहा जाय कि मिठाई बनाने में कारीगरी करनी पडती है, उसमें कला की आवश्यकता होती है, तो यह कथन भी असत्य है । मधुमक्खी की कारीगरी को देखकर बड़े बड़े वैज्ञानिक अचम्भे में पड गये हैं, मधुमक्खी अपने छत्ते में शहद भरने के लिए ऐसे छेद बनाती है कि उनमें रञ्चमात्र भी अन्तर दिखाई

नहीं देता। कुशल कारीगरी की बनाई हुई चून्दड़ी के डिब्बों अन्तर मिलेगा, चतुर सोनी के बनाये हुए घूंघरो में भी अन्तर पाया जा सकता है, परन्तु मधुमक्खी के बनाये हुए छेदों में अन्तर नजर नहीं आवेगा। मधुमक्खी ने ऐसी पैमायश किस शाला में सीखी? उसने यह ज्ञान कहाँ प्राप्त किया है, जिसके सामने बड़े बड़े वैज्ञानिकों को नीचा देखना पड़ता है?

ऐ मनुष्यो! तुम अपनी कारीगरी के लिए क्यों ऐंठे फिरते हो? अभी तुम्हारे भीतर मधुमक्खी के बराबर कारीगरी तो आई नहीं है? और इतना ही क्यों मधुमक्खियों ने इन छेदों के अन्दर शहद भरने के लिए, क्योंकि बिना सहारे शहद टिक नहीं सकता अतएव मोम लगाया है। किन-किन द्रव्यों को अंश लेकर इन्होंने मोम बनाया है? इन्हें किस रसायन शाला ने यह सिखाया कि अमुक अमुक द्रव्यों के सम्मिश्रण से मोम तैयार हो जाता है?

फिर शहद इकट्ठा करके मधुमक्खियों ने कमाल ही कर डाला है। अनेक प्रकार के पुष्पों में से रस निकाल निकाल कर शहद क्या कम कारीगरी है? क्या साधारणसा कौशल है? नहीं परन्तु मधुमक्खियों ने इतना ही नहीं किया उन्होंने एक बड़ा काम और भी किया है। वह यह है कि छेदों के भीतर ज्यादा से ज्यादा शहद भरना और उनमे कम से कम मोम लगाना। मित्रो यह साधारण काम नहीं है। इस काम में उन्होंने अपने उत्कृष्ट कौशल की सीमा करदी है। आप उसे ध्यान पूर्वक देखेंगे तो मधुमक्खियों का कौशल देख कर आपको दंग रह जाना पड़ेगा।

मधुमक्खी में शहद उत्पन्न करने का सद्गुण है। अब

अपनी ओर दृष्टि दौड़ाइये। सोचिए आप में ऐसा कौन-सा सद्-
गुण है जो शहद की बराबरी कर सकता हो?

आप में मिठाई बनाने की कला है पर वह पराधीन। मधु
मक्खी मे मधु तैयार करने की कला है। इतना होने पर भी अगर
आप मूंछें मरोड़ कर अकड़ कर दिखाते फिरें और मनुष्य होने
का अभिमान करें तो यह कहाँ तक उचित कहा जा सकता?

आपके पकवान शहद के सामने तुच्छ हैं। आपकी कारीगरी
मक्खी की कारीगरी के आगे नाचीज है। फिर आप सोचिए कि
प मधुमक्खी से आगे बढ़े हुए हैं या पिछड़े हुए हैं?

ऐसी स्थिति में स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि
मनुष्य मक्खी से बड़ा कैसे है? इस प्रश्न पर गौर से विचार
करना चाहिये। मक्खी यह कारीगरी आज से नहीं वरन् न जाने
कब से कर रही है। फिर भी उसने अपने कार्य में कुछ भी परि-
वर्त्तन नहीं किया। वह जैसा पहले करती थी वैसा ही आज भी
कर रही है। उसका यह विज्ञान जड़-विज्ञान है। इसमे विपरीत
मनुष्य अपने विज्ञान को बढ़ा सकता है। वह नित्य नवीनता ला
सकता है। मनुष्य मधुमक्खी के ही नहीं, वरन् सारी सृष्टि के
विज्ञान को अपने मस्तिष्क में भर सकता है। मस्तिष्क शक्ति की
विशिष्टता के कारण मनुष्य मधुमक्खी से बड़ा है।

मनुष्य के विज्ञान ने घड़ी, रेल, बिजली, वायुयान, बेतार का
तार आदि अनेक अन्वेषण किये हैं। मानवीय विज्ञान की बदौ-
लत, अमेरिका प्रेसीडेन्ट के अमेरिका मे होने वाले भाषण को
आप घर बैठे अनायास ही सुन सकते है। यहाँ की प्रधान अभि-

नेत्री के नृत्यकला के हाव भाव आप घर बैठे देख सकते हैं। इस विज्ञानशाला ने कइयो की आंखें खोल दी हैं। पहले अग्नि भोजन बनाने के काम आती थी और पानी का प्रायः पीने मे प्रधान उपयोग होता था। पर अब उसकी सहायता से ऐसे-ऐसे काम किए जाते हैं कि उन्हे देखकर और सुनकर आश्चर्य का पार नहीं रहता। पानी से बिजली निकाली जाती है और वह आपके घरो को जगमग-जगमग कर देती है। साथ ही और भी सैकडो काम आती है।

मनुष्य ने कितनी बडी उन्नति करली ? मनुष्य के सिवाय दूसरा कोई प्राणी ऐसा कर सकता है ? क्या मनुष्येतर प्राणी में विज्ञान के इस चमत्कार को समझने की भी शक्ति है ? नहीं।

पर हमे इस माननीय उत्कर्ष पर सूक्ष्म विचार करना चाहिए। यह मानव शक्ति दैवीशक्ति नहीं है। यह मांत्रिक शक्ति भी नहीं है। यह यांत्रिक शक्ति है। इस शक्ति से मनुष्य के सुख में वृद्धि हुई या दुःख मे ? इसकी बदौलत मनुष्य स्वतन्त्र बना है या परतन्त्र ?

मैं आप से एक प्रश्न करता हूँ। बताइए, बीजली बड़ी है या आपके घर का दीपक बडा है ? मित्रो ! इस बिजली ने तुम्हारे घर का दीपक हटाकर घर की मंगल महिमा का हरण कर लिया है। बिजली के प्रताप ने तुम्हारी आँखो का तेज हर लिया है। इसकी बदौलत मनुष्य को इतनी अधिक क्षति पहुँची है कि उसकी पूर्ति होना बहुत कठिन है। बिजली तथा इसी प्रकार की अन्य जड़ वस्तुओं से आपको बहुत हानि पहुँची है। इन वस्तुओं ने आपके सुख को सुलभ नहीं बनाया। आधुनिक विज्ञान की आलोचना करने का समय नहीं, फिर भी इतना तो कहना ही पड़ेगा कि

विज्ञान के राक्षसी यन्त्रों ने विकराल विध्वंस की सृष्टि की है। विज्ञान की कृपा से ही आज संसार ग्रस्त है। जगत में हाय हाय की गगन को गुञ्जित करने वाली ध्वनि सुनाई पड़ रही है, दुःखियों का जो करुण चीत्कार कर्णगोचर हो रहा है, मुरदघरों का जो रोदन सुनाई दे रहा है, यह सब विज्ञान की विरुदावली का गान है। जिनके कान हैं वे इस विरुदावली को सुनें और विज्ञान की वास्तविकता पर विचार करें।

कहने का आशय यह है कि मनुष्य की वैज्ञानिक प्रगति उसके मस्तिष्क की महिमा को भले ही प्रकट करती हो, पर उससे मनुष्य की मनुष्यता जरा भी विकसित नहीं हुई। जो विज्ञान मनुष्य की मनुष्यता नहीं बढाता, बल्कि उसे घटाता है और पशुता की वृद्धि करता है, उसी विज्ञान की बदौलत मनुष्य अपने आपको पशुओं से विशिष्ट-उच्च श्रेणी का मानता है ? इसे अगर मनुष्यता का दिवाला कहा जाय तो क्या अनुपयुक्त होगा ? इससे या तो मनुष्यता का मूल्य घटता है या फिर पशुता का मूल्य बढ जाता है—दोनों के बीच की दीवाल गिर पडती है।

आपने लक्ष्मी प्राप्त करली, अधिकार आपके हाथ मे आगया, लेकिन इनसे क्या कर लिया ? क्या आपने अपने दो हाथो के बदले चार हाथ बना लिए ? क्या आपकी पाँच इन्द्रियो की जगह छः इन्द्रिया होगई ? अगर नहीं, तब आपने क्या किया ? पुराणो मे शिव के तीन नेत्र माने गये हैं। लोग शिव की पूजा करते है। पर शिव की जड-मूर्त्ति की पूजा करके बैठ रहे और शिव के तृतीय नेत्र की तरह अपने अन्दर दिव्य-ज्ञानरूपी नेत्र पैदा न कर सके तो वह पूजा निरर्थक समझी जायगी। शिव की सच्ची

पूजा है—स्वय शिव-स्वरूप कल्याणमय बन जाना।

जो लक्ष्मी प्राप्त करके, ऋद्धि-सम्पत्ति और अधिकार पा करके भी दिव्यज्ञान रूप तृतीय नेत्र प्राप्त करके शिव रूप न बना, उसकी लक्ष्मी बिल्कुल व्यर्थ है, उसका अधिकार धिक्कार योग्य है और उसकी समस्त ऋद्धि-सम्पत्ति उसी का नाश करने वाली है।

आप में से कई-एक आदमी सोचते होंगे कि मैं उनके धन की निन्दा कर रहा हूँ। मैंने उनकी ऋद्धि के प्रति घृणाभाव प्रकट किया है। पर मित्रो! बात ऐसी नहीं है। यद्यपि यह सच है कि मेरी निगाह में धन का अपने आप में कोई मूल्य नहीं है, तथापि अभी मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह यह कि सच्चा धन, सच्ची लक्ष्मी, वही है जिससे मनुष्य त्रिनेत्रधारी शिव-शंकर-कल्याण कर्त्ता बन जाय।

आप कहेंगे—धनवान या लक्ष्मीवान् भी कभी शिव बन सकता है? मैं कहता हूँ—क्यों नहीं? ऋद्धि के सागर में बैठे हुए बहुतों ने शिवत्व प्राप्त किया था। चक्रवर्ती भरत ने और माता मरुदेवी ने कहां शिवत्व पाया था? फिर इस शंका को अवकाश ही कहाँ है?

जिस मनुष्य ने नित्यानित्य का विवेक प्राप्त कर लिया है, हृदय के भीतर ज्ञान-पूर्वक वैराग्य जगा लिया है, वह घर में बैठा हुआ भी शिवत्व प्राप्त कर लेता है।

इसके विपरीत, जिसके हृदय में भोग-लालसा नृत्य करती रहती है, जो काम, क्रोध आदि का शिकार बन कर सिंह, सर्प आदि की तरह समय-समय पर क्रूरता प्रकट करता है, वह भले ही साधु के वेष में हो। फिर भी निन्दनीय है। क्रोधी और कामी

अपनी आत्मा का हनन करता है और दुःख का भागी है।

जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य पूज्य श्री १००८ श्री जवाहरलालजी महाराज का फरमान है कि जब मैं बचपन में, कुमार-अवस्था में था, तब श्रीधर्मदासजी महाराज के शिष्य श्री मगनलालजी महाराज के प्रति मेरी गुरु आम्नाय थी। उन्होंने मुझ से एक बात कही। वह यह थी—

दो चिड़ियाएँ आपस में लड़ने लगीं। उनमें इतनी उग्र लड़ाई हुई कि एक-दूसरी की चोंच में चोंच डाल कर, क्रोध में पागल होकर दोनों आपस में उलझती हुई नीचे आ गिरीं। न वह उसकी चोंच छोड़े, न वह उसकी। दोनों एक-दूसरी को पकड़ कर फँसी रहीं। इस प्रकार बहुत देर होगई। आखिर एक कुत्ता वहाँ आया। उसने अपने पंजे का झपट्टा मारा दोनों के प्राण-पखेरू उड़ गये।

मित्रो! बात साधारण है, छोटी-सी जान पड़ती है। पर इसके रहस्य का विचार कीजिए। बताइए उन चिड़ियों के मारने में दोष किसका है? मृत्यु के लिए कुत्ता जिम्मेवर है या वे स्वयमेव?

"वे स्वयमेव?"

क्यों? उन चिड़ियों ने ऐसा कौन-सा काम किया, जिसके कारण उन्हें दुःख भोगना पड़ा?

मित्रो! प्रकृति का नियम निराला है। उस नियम को कोई तोड नहीं सकता।

विचार कीजिए, क्या उन चिड़ियों को घर बांटना था? क्या उन्हें धन-दौलत का बटवारा करना था? असीम आकाश में

नुम धनवानों का स्वर्ग में प्रवेश होना नितान्त असम्भव है।

मित्रो ! मनुष्य होकर मनुष्यता सीखो। धन का मोह छोड़ो। म क्रोध से नाता तोड़ो। अपने जीवन को परोपकार में लगाओ। भी आप महावीर के सच्चे शिष्य कहलाओगे और कल्याण के भागी बनोगे।

बाद में पाच मिनट तक आत्मा की, देश की, राज्य की और धर्म की शान्ति के लिये ओ३म् शान्ति की प्रार्थना हुई उस रोज मिलिट्री के काले व गोरे सैनिको ने भी प्रार्थना की व "अहिंसा परमोधर्म" का पालन किया व ईश्वर प्रार्थना की गई जिसकी खुश खबर हमारे नामदार हिज एक्सीलेंसी वायसराय मार्कवीस ऑफ लार्ड लन्लिथगो ( P. C. Night G. M. S. I. G M. I. E. O. B E. D. L. T. D, हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल ) को शिमला व पार्लियामेन्ट लन्दन के प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल साहब को इग्लेंड ता० ५-७-४२ को नसीराबाद ( छावनी ) पोस्ट ऑफीस से रजिस्टर्ड पत्र भेजा गया ता० ६-७-४२ ( ४ बज कर ५५ P M. ) वायसराय केम्प शिमला पहुँचा जिसके उत्तर में ता० ६-७ ४२ को पत्र वहां से रवाना हुआ ता० ६-७-४२ को मुनिश्री की सेवा मे मिला उसमे आपने ( यानी वायसराय महोदय ने ) जैन धर्म भूपण मुनि श्री को इस कार्य के लिये धन्यवाद ('Thanks ) देते हुए पत्र की पहुँच दी व आपके स्तुत्य कार्य की भूरि भूरि प्रशसा की। इसके अलावा निम्न समाचार पत्रो मे सवाद प्रकाशित हुए। जैनध्वज, ओसवाल, स्थानकवासी जैन प्रकाश, अर्जुन आदि आदि।

सभी अधिकारियों और श्री सघ ने महाराज श्री से यहीं चातुर्मास करने की प्रार्थना की किन्तु अजमेर के लिये वचन बद्ध होने के कारण आपने सब लोगों को सात्वना देते हुए वहाँ से अजमेर की ओर विहार कर दिया। क्योंकि अजमेर से बार बार निमन्त्रण आरहे थे और श्रीमान् मदनचन्दजी सेठी भी जब वहाँ आपके दर्शनार्थ पधारे तो वहाँ शीघ्रातिशीघ्र विहार करने की प्रार्थना की। साथ ही मार्ग में दाँता ग्राम पड़ता है वहाँ का श्रीसंघ भी बड़ा उत्सुक था कि उनके वहाँ भी महाराज श्री पधार कर धर्मोपदेश दें। यहाँ आपकी भेंट अजमेर से आई हुई गुलाबपुरा में चातुर्मास के लिये पधारते हुए विद्वत रत्न श्रीपूज्य हस्तीमलजी महाराज के सम्प्रदाय की महासती श्री छोगाजी महाराज ठाणा ३ से हुई। आपका धर्म प्रेम बड़ा ही प्रशंसनीय देखने में आया। आइये पाठक हम आपको यहाँ से चलते समय यहाँ के कुछ धर्म प्रेमी सज्जनों के नाम से परिचित करादें जिन्होंने मुनिश्री के कार्य में बड़े भक्ति भाव से भाग लिया।

श्रीमान मागीलालजी राका (जिनका नाम पहले भी आ चुका है) श्रीकेशरीमलजी सुराणा (मैनेजर अर्बन कोपरेटिव बैंक लि०) श्रीबालचन्दजी राका (मत्री नसीराबाद नृसिंह गऊ शाला) श्रीमान दानवीर सेठ साहब भँवरलालजी मुणोत (मालिक फर्म सवाईसिंह, पन्नालाल मुणोत क्लोथ मर्चेन्ट) सेठ साहब ताराचन्दजी चोपड़ा।

श्रीनथमलजी मुणोत गोपालजी, शान्तिलालजी, शिवराजजी, रतनलालजी कानमलजी नाहर, फतेलालजी माणकचन्दजी चडालिया, चम्पालालजी ताराचंदजी राका, डा० सा० मोहनलालजी

ड़ा, घीसूलालजी मोहनलालजी मुथोत, बालचन्दजी पारख
ादि २।

## ाता ठाकुर साहब की पुत्री के लग्न के समय

## पशुवध बंद

यहां के श्री सघ को जब महाराज श्री के पधारने का समा-
चार विदित हुआ तो सब लोगों ने बस्ती के बाहर जाकर बड़े हर्ष
पूर्वक महाराजश्री का स्वागत किया यहाँ जब रात्रि के समय महा-
राज श्री का व्याख्यान हुआ तो ठा० साहब श्री रामनाथसिंहजी
ी पधारे और जनता ने अच्छी संख्या में उपस्थित होकर धर्म
लाभ लिया। इन्हीं दिनों ठा० साहब के यहां लड़की की शादी थी
उसमें काम आने के लिये अनेक जीवों का प्रबन्ध किया गया
था। महाराज श्री को जब यह पता लगा तो आपने ठा० साहब
से उनमे से कम से कम दो जीवों को तो अवश्य ही अभय दान
देने का फर्मान किया किन्तु ठा० साहब पर आपके उपदेश का
इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आपने सारे ही जीवों को अभयदान
दे दिया और विवाह मे मिष्टान्न आदि का ही प्रयोग रहा। और
पूर्ण अहिंसाधर्म का पालन किया गया। यहाँ से विहार कर आप
माखुपुरा पधारे और दाँता निवासी श्रीमान् सेठ सा० कजोड़ीमल
चन्दजी के यहां ( जिनका अकेला ही घर माखुपुरा में है )
। ये दोनो भ्राता बड़े ही धर्म प्रेमी हैं।

की मार्फत भीनासर ( जहा पूज्य श्री का स्वर्गवास हुआ था ) मान् सेठ चंपालालजी वांठिया के नाम दिया गया। इस शोक भा का समाचार जैन प्रकाश बम्बई और स्थानकवासी अहम-दाबाद को भी प्रकाशनार्थ भेज दिया गया।

## चातुर्मास प्रारम्भ

अब चातुर्मास प्रारम्भ हो गया और मुनि श्री ने अपना रगर्भित, प्रेमपूर्ण, मधुर भाषण नित्य प्रति प्रातः नौ बजे से ० बजे तक शास्त्र सुख विपाकजी पठन के साथ देना प्रारम्भ किया। आपके व्याख्यान बड़े ही सरस और मनोरजक भाषा मे होने से जो एक बार सुन जाता वह प्रति दिन ही आने का उपाय करता और इस प्रकार दिन दिन यह सत्संग उन्नति करने लगा।

यहां पर वर्तमान असिस्टेन्ट कमिश्नर राव बहादुर श्रीमान् ठा० साहब ओंकारसिंहजी बड़े ही दयालु धर्मात्मा और प्रजा-वत्सल शासक हैं। आपके विषय मे जो एक कविता कविवर श्री विमल प्रकाशजी ने किसी समय रच कर आपका गुणानुवाद किया था उसे हम पाठको की जानकारी के लिये देते हैं। आप महाराज श्री के व्याख्यानो मे कई बार पधारे और बडे ही प्रेम और भक्तिभाव पूर्वक आपने धर्मोपदेश श्रवण किया और आपने मानपत्र भेट किया देखो पृष्ठ स० ५२ पर। आप इतने बडे उच्च अधिकारी होते हुए भी मान आदि दुर्गुणो से कोसो दूर है।

अमिस्टेन्ट कमिश्नर साहिब बहादुर अजमेर

Rao Bahadur Virwur Onkarsinghji

Assistant Commissioner Sahib Bahadur, Ajmer-

Merwara & Istmarardar of Bagsuri.

जैनधर्म भूषण मुनि श्री के अनन्य भक्त

राव बहादुर वीरवर ओंकारसिंहजी, असिस्टेन्ट कमिश्नर

साहिब बहादुर अजमेर-मेरवाडा व इस्तमरारदार

साहिब बागसूरी

# उपहार

श्री ______________________________

______________________________

______________________________

के करकमलों में

**सादर समर्पित**

## Congratulation.

Jain Community pay its heartiest thanks to the Rao Bahadur, Assistant Commissioner Sahib Bahadur Shri Onkar Singhji Sahib Ajmer-Merwara, Ajmer, for his great efforts of furtherance the Cause of non-injury and Justice in the town during the stay of His Holiness Munirai Shri Manoharlalji, the great Jain Dharam guru

*Jain Swetember*
*S hanakwasi Community Ajmer*

## श्रीमान् ठाकुर साहब ऊंकारसिंहजी अजमे

श्रीमान् नही अभिमान् महीपति मान् जगत गुण गावत
मानी अरु खलगण का भय से तुमरे नहि पार बसावत
नत मस्तक कृषक समाज सदा, मनुराम राज सुख पावत
ठाकुर साहब सौ साल जिये, मन ही मन खैर मानावत
कुलवंत बड़े, गुणवत दया—निधि दानी श्रेष्ठ कहावत
रणिवास शशि शीतल किरणें, शुभ आनन मन मुसकावत
ओंकार हरी हिरदे धरिके, न्यायालय मे जब जावत
का पुरुषन को डंडित करके, शुभ न्याय सदा दर्शावत
रणधीर भया विन जीवन जो, तुमरी शरणागत आवत
सिंहन से हिंस्र पशुगण हानि कर उनको सुख उपजावत
हम से दीनन जब आश लगा शुभ द्वार तिहारे आवत
जी चाही लहे दर्शन तुमरे करके अति ही सुख पावत
अति ही आनन्द वधायक हैं नृप बाग सुरी जो कहावत
जन पाकर भारत शासन के, शासक बन शोभा पावत है
मेरी विनती प्रभु से सुत हो, इनके जो वंश बढ़ावत है
रहे कीर्ति "विमल" हो अमर इनकी, जो सुख सबको उपजावत

कुछ समय पश्चात् महाराज के पूर्व परिचित अनन्य भ
श्रीमान रावसाहब जीवनसिंहजी टॉटोटी दर्बार भी यहाँ पध
और उपदेश सुनकर महाराजश्री को एक मान पत्र ( देखो
सं० ५५ पर ) भेंट किया।

ताजीमी इस्तमरारदार साहिब टांटोटी मेरवाड़ा

Rao Sahib Sri Jiwan Singhji Tajimi Istmarardar Sahib, Tantoti, ( Ajmer-Merwara )

जैनधर्म भूषण मुनिश्री के परम श्रद्धालु
राव साहब श्री जीवनसिंहजी, ताजीमी इस्तमरारदार
साहिब टाटोटी

**True Copy.**

TANTOTI HOUSE,
*Ajmer* 8 8 43

Seal of
TANTOTI

I had the proud privilege of meeting Jain Guru Shree Manoharlalji Maharaj and hearing his sermons while he was on his lecturing tour in my Estate at Tantoti particularly at my place in Garh. I had discussions which were really thought provoking.

His discourses while intelligible to all and sundry were marked for their sobriety and deep learning His magnetic personality combined with the sweetness of his speech used to keep his congregation spell bound for hours together.

I wish I may have many more occasions of coming in contact with such a charming spiritually bracing and saintly personality to guide my thoughts, illumine my understanding and thus realise higher destiny of man in this present day matearilistic world

Sd JIWAN SINGH
*Tazimi Istimarardar of Tantoti*

उसी दिन ता० ८-६-४२ को स्थानीय दरगाह कमेटी के प्रेसिडेन्ट
न बहादुर मिर्जा अब्दुल कादिर बेग महाराजश्री की शोहरत
सुनकर दर्शनार्थ आये और बड़ी दिलचस्पी के साथ व्याख्यान
सुना इसके पश्चात् दूसरी बार अपने मित्रों आदि को भी साथ
लाये और महाराजजी के साथ बहुत प्रेम प्रदर्शित किया
और एक मानपत्र भी लिखकर भेंट किया।

सांयकाल के समय प्रसिद्ध कोप लेखक व इतिहास सम्पादक
न सुखसम्पतरायजी भंडारी ( M. R. A S. Author of
Twentieth Century English Hindi Dictionary
History of Indian States etc etc ) ब्रह्मपुरी से
पधारे और बड़ी प्रसन्नता व प्रेम भाव से महाराजश्री से भेंट की।
आपने बहुतसी पुस्तकें लिखकर जनता पर काफी उपकार किया है।
आप बड़े ही विद्वान हैं। आपने चातुर्मास में मुनिश्री की बहुत
सेवा बजाई है जिसके लिये आपको सादर धन्यवाद। आपने भी
एक मान पत्र भेंट किया। जिसे देखो ( पृ० सं० ५८ पर )

यहां पर लोढा परिवार प्रसिद्ध है। यह परिवार अजमेर का
बड़ा प्रतिष्ठित और धनी परिवार है। इसी के राजा साहब उम-
रावमलजी साहब लोढा बड़े ही उदारचित्त और धर्म प्रेमी सज्जन
हैं। यद्यपि आप इंग्लैंड की यात्रा कर आये हैं। किन्तु फिर भी
आपके आचार विचारों में किसी प्रकार से कोई अन्तर नहीं
आया है। आप बड़े ही भक्तिभाव से महाराज श्री के उपदेश
सुनने के लिये आते रहे हैं और जब आप से पर्यूपण पर्व में
महाराज श्री के सार्वजनिक व्याख्यान कराने के लिये समीर शुभ
कार्यालय ( ममइयो के नोहरे ) की स्थानीय श्री संघ ने मांग पेश

## Congratulation.

Jain Community pay his heartiest thanks to His Highness Maharaja Sahib Shri Jeevan Singhji Sahib, Tazimi Istmarardar of Tantonti, Ajmer-Merwara, Ajmer, for his great efforts of furtherance the cause of non-injury and Justice in the town during the stay of His Holiness Muniraj Shri Manoharlalji the great Jain Dharamguru.

*Jain Swetambar*
*Sthanakwasi Community Ajme*

ी आपने सहर्ष स्वीकार करके सब प्रकार का सहयोग देने वचन दिया और आवश्यकतानुसार समय समय पर देते रहे। पके साथ आपके लघु भ्राता श्री कुँ० सरदारमलजी, फतेमलजी ज्जनमलजी लोढा भी पर्यूषण पर्व में बराबर आते रहे और बड़े प्रेम से धर्मोपदेश सुनते रहे।

## ॥ चीफ कमिश्नर साहब का निमंत्रण ॥

पाठक! हम पहले लिख चुके हैं कि महाराज श्री से जब मान चीफ कमिश्नर साहब की भेंट हुई और उन्होंने आपका व्याख्यान सुना तो आपसे विशेष प्रेम उत्पन्न हुआ और भविष्य में भी दर्शन की आशा प्रगट की।

अब की बार जब आप को, मुनिश्री के आगमन का समाचार विदित हुआ तो आपने ता० २७ अगस्त १९४२ को मुनिश्री से मिलने की इच्छा प्रगट की।

महाराजश्री ने पधार कर आपको धर्मोपदेश दिया जिससे आप बहुत हर्षित हुए और कहा कि आप जैसे मुनिराजों का अजमेर में चतुर्मास होना बड़े अहोभाग्य की बात है।

Sukhsampattirai Bhandari
M R A S
*Aurthor of*
Twentieth Century English-Hindi
Dictionary History of Indian
States, etc, etc

Dictionary Publishing House,
BRAHMPURI, AJMER
*Dated 16-11-1943.*

I have had an occassion to pay my respects to Jain Dharm Bhushan Muni Shri Manoharlalji Maharaj, a Jain Sadhu of cosmopolitan views and broad out-look of life.

So far as I can guess, he tries his best to understand the real meaning of the message of Lord Mahabir, whose contr butions to the humanity are the proud records of the glorious pages of Indian history

Muni Manoharlalji, so far as possible, makes every attempt to imbibe the spirit of the time & moves with it He has made profound impressions even on some prominent persons belonging to other religious sects. He is responsible to do some practical work in the field of Ahimsa, true soul of Jainism,

Muni Manoharlalji has sufficient eloquence and makes a sober influence on his audience.

His disciple Shri Vijaychandraji is an enthusiastic young man and fond of books.

Sd. SUKHSAMPATTIRAI BHANDARI

Sri Hindva Surya Aryakul Kamal Divakar, Dam-Ikbal-Hu His Highness Maharana Sahib Bhoopal Singhji G C. S I, K C. E. I, Udaipur (Mewar).

श्री हिन्दवा-सूर्य आर्य-कुल कमल-दिवाकर दाम-इकबाल-हु, हिज हाईनेस महाराणा साहब भूपालसिंहजी जी० सी० एस० आई०, के० सी० ई० आई०, उदयपुर,(मेवाड़)

Sasta Sahitya Press, Ajmer

को तो आपने सहर्ष स्वीकार करके सब प्रकार का सहयोग देने का वचन दिया और आवश्यकतानुसार समय समय पर देते रहे। ... भ्राता श्री कुँ० सरदारमलजी, फतेमलजी ... बराबर आते रहे और बड़े

ालय भवन ) सम्प्रदायों का नौहरा ता० २८-८-४२ से
ाद्र पद शुक्ला पञ्चमी ता० ४-९-४२ तक समय ६ बजे से
ाजे तक दोपहर को २ बजे से ३ बजे तक।

(२) पञ्च परमेष्ठी नवकार महामंत्र के अखंड जाप का लाभ।

(३) ॐ शान्ति प्रवचन का लाभ।

(४) पर्यूषण पर्व आराधन का लाभ।

नोटः—मिती भाद्र पद शुक्ला सप्तमी ता० ६-९-४२ से लाखन कोटड़ी सुरतरामजी का चौक कचहरी में मुनि श्री का विराजना रहेगा और प्रति दिन नियमित समय पर व्याख्यान होंगे।

[ नोट—महिलाओं के लिये खास प्रबन्ध है ]

आपका

| | |
|---|---|
| दर्शनाभिलाषी<br>दीपचन्द छाजेड़<br>हेमचन्द ढींगड़ | श्री श्वे० स्था० जैन श्री संघ अजमेर |

पर्यूषण पर्वाधिराज का प्रथम दिवस शानो शौकत से प्रारम्भ हुआ। ज्ञान पिपासु मुनि विजयचद्रजी म० सर्व प्रथम परिषद् को "सूत्र अंतगढ़" जी बड़े ही मधुर शब्दों से फर्माते थे। जनता आकर्षित हो तन मन से लीन हो रसा स्वादन करती थी। तथा समय पर मयूर की भांति मेघ के समान 'जैन धर्म-भूषण' मुनिश्री के मुखारविंद की बाट तीव्र लालसा से निहारा करती थी। उस तेजस्वी मूर्ति के पधारते ही जनता मनोमुग्ध हो शांत भाव से स्थिर चित्त हो अमृतोपदेश श्रवण करने को उत्सुक रहती थी। मुनिश्री की हृदयोल्लसित अमोल वाणी मानव संतप्त हृदयों को चंद्र के सदृश शीतल करने वाली थी। वृद्ध पुरुषों का कहना है

के प्याले अमृत हो गये। अतः ईश्वर प्रार्थना तो मनुष्य हालत मे सुरगी बनाने वाली है। अप्राप्य वस्तु भी प्राप्य ती है पूर्व भारत किसी हद तक ईश्वर भक्त था। ईश्वर भक्ति नके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। आज के भारतवासी इस से आज कहीं परे हैं अर्थात् ईश्वर का नाम तो काटे की तरह य में चुभता है तब कहिये दो घड़ी एक स्थान बैठ कर ईश्वर ाप करना तो मानो १०५ डिग्री के बुखार को ही निमन्त्रित करना है। वे तो आज दीर्घ दुर्गुणो की तन्द्रा मे सोये हुये हैं। किन्तु समय इतना नाजुक है कि बिना ईश्वर स्मरण के हमारा छुटकारा नहीं। सम्पूर्ण विपत्तियों का एक साथ टूट पड़ने का एक मात्र कारण है ईश्वर वाद से नास्तिकता की ओर अग्रसर होना। यदि आज भी हमारे हृदयो मे विदुर व तुलसा जैसा ईश्वर प्रेम जागृत होजाय तो पुन: भारत वर्ष स्वतन्त्रता की ठंडी लहर का अनुभव करने लगे। सज्जनो! यदि आप-आज से भी सब मिल कर जगत ाति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें तो शासन देव।अवश्यमेव सहायता प्रदान करेंगे।"

मुनिश्री ने फरमाया कि इस समय १०८ तेले होने की नितान्त आवश्यकता है। माग होते ही भाई बहिनो ने तेले करने पर कमर कसली और मेघवत तपश्चर्या की झड़ी लगा दी। बाद मे मुनिश्री ने विधवा सहायता की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये कहा कि आज हमारे समाज मे विधवाओ की एक बड़ी ारी सख्या मौजूद है जिनमे से कई बहिनो को भर पेट भोजन ो नसीब नही होता जब कि हम ऐसा आराम से दिन व्यतीत कर जीवन का आनंद लूट रहे हैं। यह दर्दनाक हालत भी हमारी अवनति में एक महत्व पूर्ण कारण है। अत: इस विषय मे आप

२ को श्री संघ ने सुनहरी स्याही से निम्न आशय के शन कार्ड छपवाकर उत्साही कार्यकर्त्ताओं का डेप्युटेशन रा उक्त पदाधिकारियों की सेवा में ता० ४ संवत्सरी पर्व के स्थान में पधारने के लिये भेजा था।

**Copy.**

Jain Dharam Bhushan Pandit Muni Shree Manoharlalji Maharaj Sahib is delivering lectures on Jainism in Samir Subh Karyalaya ( Mamaiyon ka Nohara ) during Paryuson days All are therefore cordially invited to attend and avail themselves of this golden opportunity.

Time—9 A M to 11-30 A. M

Place—Mamaiyon ka Nohara ( Lakhan Kotri ) Date of completion—4th September 1943.

*Shri Swetambar Sthanakwasi Jain*
*Shree Sangh Ajmer. (Rajputana)*

सम्वत्सरी पर्वाधिराजपर्व के दिवस वालन्टियरों ने व्यवस्था काफी ठीक ढग से की थी। विशाल चौक मे नीचे तख्ते आदि बिछा कर बिछायत करदी थी। औरतों, मर्दों तथा बच्चे बच्चियों से विशाल मंडप इतना ठसाठस भराहुआ था कि यदि कोई चीज आसमान की तरफ फैंकी जाय तो वह श्रोताओं के मस्तक पर ही अधर रह जाय। आज की कुछ नवीन ही झलक थी, अद्भुत ही छटा थी जिसका किसी हालत मे वर्णन नहीं हो सकता।

सब से आगे अधिकारियो आदि सज्जनो के बैठने के लि' गलीचे आदि बिछे हुये थे।

ठीक ६ बजे व्याख्यान आरम्भ हुआ। प्रथम मुनिश्री विजय चन्द्रजी का व्याख्यान हुआ। तत्पश्चात् जैन धर्म भूषण मुनि श्र ने आगन्तुक सज्जनों के हृदयो को अपनी अमृतमय वाणी द्वार पवित्र किया। आज श्रीमान् असिस्टेन्ट कमिश्नर सा० श्री ओंकार सिंहजी, केरोट दरबार उदयसिंहजी सा०, बबेरा ठाकुर सा० वे दोनों भ्राता, जज सा० त्रिलोकीनाथजी, भूतपूर्व दीवान ममूद रा० ब० सर किसनलालजी, प्रसिद्ध वकील मिर्जा अब्दुलकादिर बेग सा०, हकीम सा०, वकील सा० चन्द्रिकाप्रसादजी, बाबू मिट्ठनलालजी तथा हिन्दी संसार के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुख सम्पत्तिरायजी भण्डारी, मस्ता साहित्य प्रेस अजमेर के मालिक तथा देश के प्रसिद्ध नेता जीतमलजी लूणिया, कविवर विमल प्रकाशजी आदि २ अनेक सज्जनों का पधारना हुआ था।

मुनि श्री ने अपने ओजस्वी भाषण में यही बतलाया कि प्राणीमात्र के लिये केवल धर्म ही आधारभूत है। एकमात्र धर्म का ही सहारा है। यदि यह सहारा न हो तो प्राणी किसी मतलब का नहीं। धर्म के बिना कोई व्यक्ति सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। इस धर्म के लिये बड़ी २ विभूतियों ने अपने प्राणों का भी न्योछावर कर दिया है। धर्म धारण करना आसान काम नहीं। तलवार की धार पर चलने के समान धर्म का पालन करना है। धर्म किसी खास व्यक्ति के ग्रहण करने की चीज नहीं। रंक से चक्रवर्ती पर्यन्त धर्म का ग्रहण कर सकता है। जाति भेद भी इसमें कु नहीं है। कहा है:—

...ग्वाधिकारस्ते' अथवा कम्मुणा बम्भणो होई, कम्मुणा
...त्तिओ, के मुताबिक धर्म ग्रहण करने का प्रत्येक को अधि-
...है। भगवान ने धर्म चार प्रकार का बताया है—दान, शील,
और भावना ये चार ही प्रकार आत्मा को उत्कृष्ट सीढ़ी पर
...ाने वाले हैं। ये चारों ही आत्मा के गुण स्वरूप हैं। धर्म-
...ान व्यक्ति को देवेन्द्र भी मस्तक झुकाते हैं और विघ्न बाधाओं
...के समुपस्थित होने पर पूर्ण रूपेण सहायता प्रदान करते हैं।
...मलतों, धर्म के प्रभाव से, सीता को अग्नि कुंड का पानी, चन्दन
...बाला को बेड़ियों का जेवर, हरिश्चन्द्र महाराज को श्मशान
...पुरी तथा सुदर्शन सेठ को शूली का सिंहासन होगये। धर्म
...त प्राणो की परवाह न करने वाले मेवाड़ शिरोमणी महाराणा
...प्रताप को अरावली की कन्दराओं में धर्म का पालन करते हुये
दैविक रूप में भामाशाह ने तथा हरीवल मच्छीमार को जीव
दया ने ही विकट समय में सहायता दी। सम्पूर्ण सौख्य दायक
केवल धर्म ही है। यह निस्संदेह सत्य और अटल नियम है कि
जो धर्म की रक्षा करता है उसकी सहायता धर्म करता है।
एतदर्थ धर्माचरण मे प्राणियों को रत रहना चाहिये। कीडी से
लेकर हाथी की आत्मा को भी सुख पहुँचाना धर्म है। चाहे जैसा
बन सके धर्म जरूर करना चाहिये। भूखे को भोजन देकर, वस्त्र
हीन को वस्त्र देकर जीवों को अभय दान देकर और कुछ न बने
तो आत्मा को धर्म चिन्तन मे तत्पर करके ही धर्म कर सकते हो।

आज ससार की दर्दनाक हालत ने ऐसा ताण्डव नृत्य मचा
रखा है जिसे देखने को जी नहीं चाहता किन्तु पराधीन हो देखना
पड़ रहा है। अजमेर-मेरवाड़ा, मेवाड़ तथा वर्दवान मे बाढ़ के
अचानक आने से जनता और जानवरों तथा माल असबावों

की जो खराबी हुई है वह नरक के दृश्य से कुछ कम नहीं है। इसी
प्रकार बंगाल उड़ीसा में अन्न बिना तथा नाना प्रकार की
बीमारियों से मरना आप दोजख के यमों के प्रकोप से क्या कम
मानते हैं? नहीं, कभी नहीं किसी का दिल गवाही नहीं देगा कि
यह भीषण प्रकोप धर्म के प्रभाव से हुआ है। पापोदय ही इसका
मुख्य कारण है। किन्तु आप सौख्य भण्डार प्राणियों का कर्तव्य
अपने दुःखी भाइयों की हर प्रकार मदद करने का है। म० में
श्रीमान जीतमलजी लूणिया का समयोपयोगी भाषण हुआ।
तदनन्तर मुनिश्री ने पूर्वोक्त असमर्थ विधवाओं की सहायता पर
पुनः प्रकाश डाला और श्री संघ से अनुरोध किया कि यहां
"विधवा सहायक फण्ड" की नितान्त आवश्यकता है। अतः
अवश्य होना चाहिये। ज्यों २ आप लक्ष्मी का सदुपयोग शुभ
कार्यों में करेंगे त्यों २ आपका खजाना अपूर होगा। तत्पश्चात्
बाबू सुगनचन्दजी नाहर तथा धर्मोत्साही कार्यकर्ता कल्याण-
मलजी बेद ने खड़े होकर उत्साह वर्धक चन्दा सदर कद का चंदा
एकत्रित करना शुरू किया।

तब राजा साहब उमरावमलजी सा० लोढा ने इस विषय में
बड़ी दिलचस्पी ली और वचन भी दिया। अतः राजा सा०
अवश्य एक बड़ी रकम इस शुभकार्य में प्रदान कर लोढा वंश
की ख्याति में अग्रसर हो अमर नाम करेंगे। आज एक आवाज
में ११००) (ग्यारह सौ रुपये) का फंड एकत्रित होगया। अभी
इस फंड की बाल्यावस्था है। किन्तु समय पाकर श्रीसंघ के सहा-
यता से आदर्श रूप में जनता के सामने उपस्थित होगा। तत्पश्चात्
मुनि जिनचन्द्रजी, डाक्टर [illegible] साहब मेहता, हीवर
त्रिलोकचन्दजी डाक्टर मिश्रीमलजी [illegible] चोपड़ा